लोक हितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा अर्चना

अंक-12 वर्ष-2020

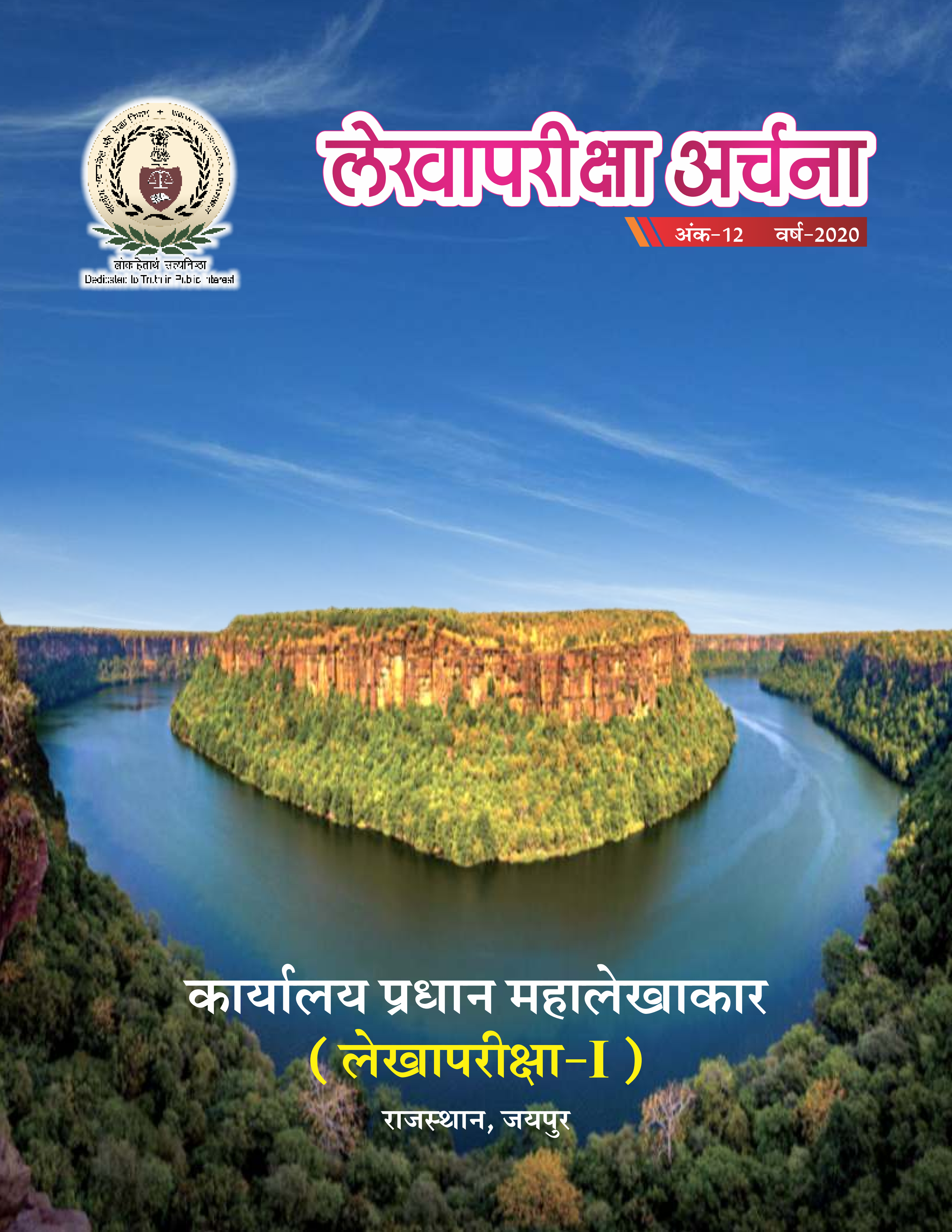

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I)

राजस्थान, जयपुर

कार्यालय में आयोजित कवि सम्मेलन का दीप जलाकर शुभारम्भ करते हुए महालेखाकार महोदय

लेखापरीक्षा अर्चना

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा-I)

राजस्थान, जयपुर की हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका

संरक्षक

श्री अनादि मिश्र
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I), राजस्थान

परामर्शदाता

श्रीमती मीना बिष्ट
वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन

सम्पादक मण्डल

प्रबन्ध सम्पादक
श्री कमलेश कुमार रावत
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सम्पादक
श्री वीरेन्द्र सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक सम्पादक

श्री सत्यबीर सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित गौतम
लेखापरीक्षक

स्वत्वाधिकारी महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती मीना बिष्ट, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) द्वारा अशोका ऑफसेट, आदर्श नगर जयपुर से मुद्रित एवं कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित, सम्पादकः श्री वीरेन्द्र सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी।

www.agraj.cag.gov.in

आवरण पृष्ठ : गराडिया महादेव, कोटा (राजस्थान)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि हम अपनी विभागीय राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" का बारहवां अंक प्रकाशित कर रहे हैं। पठन-पाठन व्यक्तित्व विकास में तो सहायक है ही साथ ही यह किसी संस्थान की छवि के निर्माण में भी अपना विशेष महत्व रखता है। इसके लिए स्तरीय एवं ज्ञान से भरपूर सामग्री से युक्त पत्र पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने के साथ साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अनादि मिश्र)
महालेखाकार

सम्पादकीय

हमारी विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' का 12वां अंक सुधि पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। कोरोना रूपी विश्वव्यापी महामारी के चलते पत्रिका के इस अंक को आप सभी तक पहुँचने में विलम्ब हुआ, जिसका हमें खेद है। यह संकट अभी टला नहीं है। इस महामारी के विरुद्ध लड़ाई में संक्रमण की रोकथाम के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है। किसी एक वयक्ति की लापरवाही पूरे परिवार/समुदाय पर भारी पड़ सकती है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम खुद भी सतर्क रहे तथा दूसरों को भी बचावें। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर दायित्वों का निर्वहन गम्भीरता से करें।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पत्रिका के प्रकाशन से जहाँ एक ओर कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है वहीं दूसरी ओर उनमें अपने कार्यालयीन कार्यों को हिन्दी में करने के प्रति रूचि भी बढ़ती है। हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन निश्चित रूप से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

प्रस्तुत अंक में हमारे कार्यालय में पिछले छः माह में होने वाली गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों के साथ साथ कार्मिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर रचित लेख, कहानी एवं कविता इत्यादि का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पत्रिका में योगदान देने वाले सेवारत एवं सेवानिवृत्त कार्यालयकर्मियों तथा अतिथि रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका इस स्तर तक पहुँच पायी है। आशा है कि अर्चना का यह अंक रोचक ज्ञानवर्धक एवं सुधि पाठकों के लिए उपयोगी भी सिद्ध होगा। इसके साथ ही, पाठकवृन्द से अनुरोध करता हूँ कि वे पत्रिका की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करावें जिससे हम आगामी अंकों को और उपयोगी एवं रूचिकर बना सकें।

वीरेन्द्र सिंह

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	वर्तमान में हिंदी की बढ़ती आवश्यकता	आलेख	श्री शंकर लाल सीमावत	05
2.	अतुल्य उत्तराखण्ड की अमूल्य निधि	आलेख	श्री सत्यबीर सिंह	07
3.	मैं चलना छोड नहीं सकता	कविता	श्री विक्रम भारती	09
4.	जिंदगी की ढलती शाम	कविता	सपना सक्सैना	09
5.	जयपुर का अद्‌भुत चरित्र	आलेख	श्री एम. सी. मित्तल	10
6.	प्रेमानुभूति	कविता	श्री तुलसी राम धाकड़	13
7.	कौन छीन रहा है बच्चों का बचपन ?	आलेख	श्री पी.सी. गाँधी	14
8.	नव वर्ष के प्रथम दिन की सांझ	कविता	श्री कैलाश आडवानी	16
9.	कहत कबीर सुनो भाई साधो	आलेख	श्री कृपा शंकर शर्मा “अचूक”	18
10.	ये कैसी माँ	कहानी	लवली शर्मा	21
11.	क्या रक्षिता भाग गई ?	कहानी	श्री बिशन लाल अनुज	27
12.	माँ की वन्दना	कविता	श्री नागर मल यादव	30
13.	प्लास्टिक एवं उसके दुष्प्रभाव	आलेख	शिवपाली खण्डेलवाल	32
14.	भागीरथी	आलेख	श्री बनवारी लाल सोनी	34
15.	बचपन की वो याद	आलेख	श्री ध्रुव नौटियाल	37
16.	लेखापरीक्षा वर्ग पहेली	वर्ग पहेली	श्री किशन लाल मिरोठा	39
17.	खिड़की	कहानी	श्री रामानन्द शर्मा	40
18.	लघुकथाएं	कहानी	श्री देव शर्मा	42
19.	कार्यालयीन गतिविधियां	प्रतिवेदन	श्री कमलेश कुमार रावत	43
20.	पाठकों के अभिमत	प्रतिक्रिया	पाठकवृंद	45
21.	लेखापरीक्षा शब्दावली	शब्दावली	राजभाषा अनुभाग	47
22.	आज है 15 अगस्त	कविता	श्री मदन लाल कोली	48

(पत्रिका में प्रकाशित विचार रचनाकारों के अपने हैं एवं वे इसके लिए स्वयं उत्तरदायी हैं।)

वर्तमान में हिंदी की बढ़ती आवश्यकता

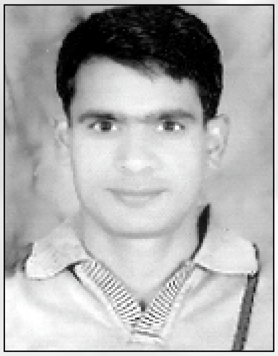

हिंदी भाषा विश्व की तीसरी और भारत में यह सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी भाषा को हम सभी समझते हैं, जानते हैं और बोलते भी हैं, लेकिन जीना सीखने में अभी भी सही मायनों में अभयस्त नहीं हैं। सोचने की बात यह है कि हिंदी बडी प्यारी एवं सरल भाषा है। हम इसका किसी न किसी रूप में उपयोग जरुर करते हैं। हम अपने विद्यालय में एवं अपने दोस्तों के साथ खेल के मैदान पर हिंदी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। हम कोई वस्तु खरीदने जाते हैं जैसै फूल-सब्जी या अन्य कोई सामान तो हम दुकानदार से हिंदी में ही बात करते हैं। हिंदी भाषा का स्वरूप, प्रकृति एवं इतिहास दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक भाषा के रूप में है। हालांकि, हिंदी भाषा से भी पहले संस्कृत का उद्‌गम हुआ था। हिंदी का क्षेत्र बहुत विशाल है तथा हिंदी की अनेक बोलियां (उप भाषाएं) हैं। इनमें से कुछ में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना भी हुई है। कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, मलिक मुहम्मद जायसी, बोधा आलम ठाकुर जैसे कवियों की रचनाएं इसका उदाहरण हैं। इन बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। ये बोलियां हिंदी की विविधता हैं और उसकी शक्ति भी। वे हिंदी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। हिंदी की बोलियों में प्रमुख है-अवधि, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, भोजपुरी, हरियाणवी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, मालवी झारखण्डी, कुमाउँनी, मगही आदि।

हम जानते है कि किसी भी आजाद देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है जो उसका गौरव होती है तथा राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के स्थायित्व के लिए पूरे देश में उसका उपयोग होता है। इसी तरह देश की अपनी एक राजभाषा भी होती है, राजभाषा मतलब सरकारी कामकाज की भाषा और जिसमे एक आम नागरिक भी सरकार के कामकाज को समझ सके। हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। किसी भी भाषा को राजभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता, सब प्रकार के भावों को प्रकट करने की सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य होते हैं। यह सभी गुण हिंदी भाषा में हैं। भारत देश में अनेक राज्य है और उन सभी राज्यों की भी अपनी अलग-अलग भाषाएं हैं, इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली आदि राज्यों की हिंदी प्रमुख भाषा है। पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र और अंडबार निकोबार में इसे द्‌वितीय भाषा का दर्जा दिया गया है। बाकी प्रान्तों में यदि कोई भाषा सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जा सकती हैं तो वह हिंदी ही है। आज भी हिंदी देश के कोने कोने में बोली जाती है। यानि हिंदी राजभाषा, सम्पर्क भाषा एवं जनभाषा के स्तर को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर

अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियां हिंदी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की जो चन्द भाषाएं होगी, उनमें हिंदी भी प्रमुख होगी। गैर-हिंदी भाषी भी थोड़ी बहुत और टूटी-फूटी हिंदी बोल और समझ सकता है । जाहिर है कि यहां ज्यादातर लोग बातचीत करते समय हिंदी भाषा को ही प्रधानता देते है, बचपन से ही हमें अपने घरों में हिंदी भाषा का ज्ञान दिया जाता है। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. राम मनोहर लोहिया ने प्रत्येक हिंदीभाषी क्षेत्र के निवासी को सलाह दी थी कि वे जहां, जिस क्षेत्र में या प्रदेश में रह रहे हों, वहां की एक स्थानीय भाषा जरूर सीखें, उसका आदर करें, उसी स्थानीय भाषा को वहां पर बोलचाल में भी अपनाएं। इसी के साथ डॉ. लोहिया ने पूरे भारत के लोगों को हिंदी सीखने की सलाह भी दी थी। यहीं कारण है कि आज पूरे देश में हिंदी के प्रति अपनापन है बल्कि भारत ही नहीं, हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत के अलावा इंग्लैंड, अमेरिका, जापान, कोरिया, चीन पाकिस्तान, नेपाल, मॉरिशस, बांग्लादेश एवं सूरीनाम जैसे देशों में लोग हिंदी का बखूबी उपयोग कर रहे हैं। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन पाठन हो रहा है। हिंदी न केवल अपने में एक बड़ी परम्परा, इतिहास एवं सभ्यता को समेटे हुए है वरन स्वतन्त्रता संग्राम, जनसंघर्ष और वर्तमान में बाजारवाद के खिलाफ भी उसका रचना संसार सचेत है। हमारे देश भारत की मुख्य भाषा हिंदी है; बिना हिंदी के हम कोई भी अपनी दिनचर्या नहीं बिता सकते है लेकिन दुःख की बात यह है कि आज भी हमारे देश में अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य है। जो सम्मान हमारी भाषा हिंदी को वास्तव में मिलना चाहिए शायद वह आज तक नहीं मिला है लेकिन बिना हिंदी के हम अपने विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते है।

सही अर्थों में कहा जाए तो अगर हम अपनी मूलभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करे तो निश्चित ही विविधता वाले भारत को अपनी हिंदी भाषा के माध्यम से एकता के सूत्र में ओर भी मजबूती से जोड़ा जा सकता है। हिंदी के महत्व को देखते हुए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस एक ऐसा अवसर होता है जिसके माध्यम से सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधा जा सकता हैं।

जय हिंदी, जय भारत एवं जय हिन्दुस्तान।

शंकर लाल सीमावत
कनिष्ठ अनुवादक

अतुल्य उत्तराखण्ड की अमूल्य निधि

भारत विविधताओं की खूबसूरती से भरा देश है जहाँ कहा जाता है कि 4 कोस पर बदले पानी, 8 कोस पर वाणी। भारत में संस्कृति, भाषा, पहनावा, खान-पान तथा कला में विविधता आपको सहज ही देखने को मिलती है। कुछ स्थान अपने उत्पाद व संस्कृति के नाम से ही पहचाने जाते हैं जैसे फिरोजाबाद की चूड़ियाँ, नागपुर के संतरे, कांचीपुरम की रेशमी साड़ी, कोल्हापुर के चप्पल इत्यादि। इन विविधताओं को विशेष पहचान देने तथा इनको संरक्षित करने के लिए भौगोलिक संकतेक (जीआई टैग) बनाए गए हैं जो कि एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

भौगोलिक संकतेक (जीआई टैग) किसी उत्पाद की भौगोलिक पहचान, उसकी गुणवत्ता, विशिष्टता और उसकी उत्पत्ति की विशिष्ट जगह की पहचना कराता है। जिस उत्पाद को यह संकेतक मिलता है तो कोई और कम्पनी या व्यक्ति उस नाम से दूसरे किसी उत्पाद को नहीं बेच सकता है। यह संकेतक 10 साल की अवधि के लिए होता है तथा बाद में इसका नवीनीकरण कराया जा सकता है।

उत्तराखण्ड में भी कुछ ऐसे ही उत्पाद हैं जिनकी अपनी विशेष पहचान है जिसके कारण उनकी मांग देशभर में है। आज हम आपका परिचय उत्तराखण्ड के कुछ ऐसे ही उत्पादों से करवा रहे हैं जिनके बारे में जानकर आपको अच्छा लगेगा। उत्तराखण्ड को प्रकृति ने हर चीज से नवाजा है जैसे कि कल-कल बहती नदियाँ, बर्फ से लदे पहाड़, सुंदर वादियाँ, झरने, झील, घने जंगल, घास के मैदान और अनेक प्रकार के फल व सब्जियाँ। ये सभी इसे और मनमोहक बनाते है। साथ ही उत्तराखण्ड की संस्कृति व जैविक उत्पाद इसके जायके को बढ़ाते हैं।

उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले के 7 विभिन्न उत्पादों को भौगोलिक संकतेक (जीआई टैग) प्राप्त हुआ है। इसके लिए नाबार्ड व पिथौरागढ़ के जिला प्रशासन ने विशेष कदम उठाए तथा ह्यूमन वेलफेयर सोसाइटी नामक गैर सरकारी संगठन का मार्ग दर्शन प्राप्त कर यह सफलता प्राप्त की। आईए, अब आपका परिचय इन सात उत्पादों से करवाते हैं।

1. **एपन क्राफ्टः** यह विशेष प्रकार की रंगोली है जो विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, तीज त्यौहार में घरों में पूजा स्थल पर तथा घरों की दहलीज पर लाल मिट्टी से लिपाई कर, इस स्थान पर चावल व सफेद मिट्टी के रंग (स्थानीय बोलचाल में कमेट) से बनाई जाती है। एपन की क्राप्ट आज विभिन्न रंगो में बाजार में उपलब्ध है यथा-टेबल के ऊपर, पेंटिंग के रूप में, ग्रिटिंग कार्ड के रूप में, जो इसमें विविधता के साथ नयापन प्रदान करता है। एपन की शालीनता व सौम्य रंग इसे आपको अपने घर में लगाने को मजबूर कर देते है।
2. **बाल मिठाईः** यह विशेष प्रकार की मिठाई है जो कुमाऊ क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय है तथा इसकी मांग कुमाऊ के बाहर भी है । यह मुख्य रूप से अल्मोड़ा व आस-आस के शहरों में बनाई जाती है। यह खोया से तैयार की जाती है तथा बाद में चीनी के छोटी-छोटी गोल बॉल से कवर की जाती है जो इसे सुंदर रूप प्रदान करती है।

3. **मुनस्यारी का राजमाः** मुनस्यारी का राजमा एक विशेष प्रकार का राजमा है जो बहुत जल्दी बन जाता है और इसका स्वाद अन्य राजमा से अलग होता है। इस राजमा की मांग केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है। एक बार खाने के बाद आप इसका स्वाद हमेशा याद रखेंगे।

4. **च्यूरा घीः** कुमांऊ क्षेत्र में च्यूरा वृक्ष (Butter Tree) बहुतायात में पाया जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम Aisendra buttyracea है। इसके बीज तेल से भरे होते हैं तथा यह तेल व घी की जगह इस्तेमाल किया जाता है। स्थानीय कृषकों द्वारा च्यूरा पौधे से च्यूरा घी, च्यूरा शहद व अन्य उत्पाद प्राप्त किए जाते हैं। च्यूरा कृषकों की आय में वृद्धि करने में अहम भूमिका निभाता है तथा इसे वहाँ का कल्पवृक्ष भी कहा जाता है।

5. **टमटा उत्पादः** इस उत्पाद का नाम टमटा इसे बनाने वाली जाति टमटा के नाम पर पड़ा है। जनपद में कई परिवार तांबे के बर्तन बनाते हैं जो स्थानीय बोलचाल में गगरी (तांबे का बर्तन), पराद (तांबे की प्लेट) के नाम से जाने जाते हैं। ये उत्पाद न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं बल्कि लम्बे समय तक चलने वाले भी हैं। ये उत्पाद विभिन्न बर्तनों के रूप में जैसे ग्लास, प्लेट, जग, थाली आदि के रूप में बेचे जाते हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये पूर्णतः हाथ से बनाए जाते हैं इनको बनाने में मशीन का प्रयोग नहीं किया जाता है।

6. **ज्यान सॉल्ट टीः** भौटिया जनजाति द्वारा बनाई जाने वाली विशेष चाय जो एंटी कैंसर जैसे चिकित्सीय गुणों के कारण प्रसिद्ध है। यह चाय सर्दी में आपके शरीर को गर्म रखने तथा रोगों से लड़ने में मदद करती है। यह एक विशेष पेड़ की छाल से बनाई जाती है जो उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पाए जाते हैं जिसका वैज्ञानिक नाम Texus Wallichiana है।

7. **रिंगाल क्राफ्टः** रिंगाल बांस की ही एक प्रजाति है परंतु यह बांस के पेड़ से पतला होता है। इसके रेशों से कई तरह के उत्पाद बनाए जाते हैं जो आकर्षक व टिकाऊ होते हैं। इससे टोकरी, सजावटी सामान, गुलदस्ता आदि अनेक सामान बनाए जाते हैं जो पिथौरागढ़ को अलग पहचान देते हैं।

भौगोलिक संकेतक (जी आई टैगिंग) न केवल विरासत को बचाने में सहायक है बल्कि क्षेत्र विशेष की पहचान का भी परिचायक है। यह सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव लाकर लोगों को प्रेरित भी करता है। इसके कारण लोगों को सतत् आजीविका तथा उद्योग लगाने में मदद मिलती है। यह उत्पादों को विश्व भर में पहचान दिलाने में सहयोग करता है तथा उत्पाद के निर्यात का मार्ग प्रशस्त करता है। इससे उत्पादों की मांग के साथ-साथ कीमत में भी वृद्धि होती है जिससे कि देश आर्थिक रुप से समृद्ध होता है तथा देश की जीडीपी में सक्रिय योगदान मिलता है साथ ही यह कानूनी लड़ाई में आपके पक्ष को मजबूत बनाता है। नाबार्ड के सहयोग से आज उत्तराखण्ड के कई और उत्पाद भी भौगोलिक संकेतक (जी आई टैगिंग) प्राप्त करने की प्रक्रिया में हैं।

सत्यबीर सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मैं चलना छोड़ नहीं सकता

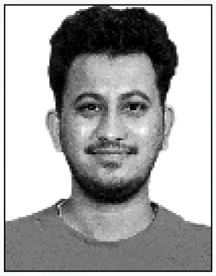

मैं चलना छोड़ नहीं सकता
पग में कितनी ही बाधा हो
जीवन पूरा या आधा हो
पत्थर राह को रोके हो
कितने तुफानों के झोंके हो
तुफानों से मुँह मोड़ नहीं सकता
मैं चलना छोड़ नहीं सकता।
धाराओं के विपरीत सही
थोड़ा सा मैं भयभीत सही
मंजिल का प्रतिकार सही
हर क्षण में मेरी हार सही
आशा विजय की तोड़ नहीं सकता
मैं चलना छोड़ नहीं सकता।
सहस्त्र कष्ट स्वीकार मुझे
हर घाव दर्द स्वीकार मुझे
घनघोर अन्धेरा हो फिर भी
चाहे दूर सवेरा हो फिर भी
मंझधार में मेरी नाव हो
चाहे घायल मेरे पाँव हो
है लक्ष्य बड़ा ये ज्ञात मुझे
मुश्किल भी है ये ज्ञात मुझे
कदम अपने मैं रोक नहीं सकता
मैं चलना छोड़ नहीं सकता।

विक्रम भारती
एम.टी.एस.

जिन्दगी की ढलती शाम

एक दिन मैं बैठी चुपचाप

सोच रही थी बस यह बात

ढलती है शाम कैसे जिन्दगी की।

कुछ न कह पाता है इन्सान अपने दिल की

दिल की बातें रह जाती है दिल में

जब ढल जाती है शाम जिन्दगी की।

ये जिन्दगी भी तो है एक सुबह की शाम की तरह

जैसे हर सुबह के बाद होती है शाम

वैसे ही हर जन्म के बाद होती है मौत

जब होता है इन्सान मौत से रूबरू

कह न पाता है अपनी दिल की आरजू

जैसे ढलती है धीरे धीरे शाम

वैसे ही ढल जाती है जिन्दगी की शाम।

सपना सक्सैना
अतिथि रचनाकार

जयपुर का अद्‌भुत चरित्र

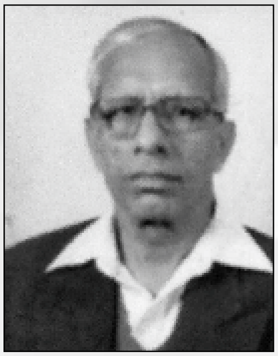

यूँ तो जीवन में भाँति-भाँति के अवसर आते हैं जो हमें अच्छे और सुखद लगते हैं और कई बार ऐसे अनुभव मन मस्तिष्क पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। वे प्रसंग बार-बार उभर कर स्मृति पटल पर आकर हमें झकझोर जाते हैं। माह सितम्बर,1969 में मुझे कार्यालय महालेखाकार राजस्थान, जयपुर से एक पत्र मिला था जिसके अनुसार 30 सितम्बर, 1969 को यू.डी.सी. के पद हेतु एक लिखित परीक्षा देनी थी। मेरे बड़े भाई के साथ 29 सितम्बर को दिल्ली-जयपुर बस से जयपुर आए। शाम के तीन बजे थे। एक धर्मशाला में हमनें अपना सामान रखा और यह मानते हुए कि कल सुबह कार्यालय ढूंढने में कोई परेशानी न हो, आज ही कार्यालय का पता लगाने के लिए हम दोनों निकल पडे। कार्यालय का समय सुबह 10 बजे से 5 बजे तक का था। एक-दो भद्र पुरुषों से पूछा तो पता चला कि यह कार्यालय राजस्थान सचिवालय की बगल में स्टेच्यू सर्किल पर है। हम दोनों अविवाहित नौजवान थे, पूछते पाछते महालेखाकार कार्यालय आ पहुँचे।

अब साँय के पाँच बज चुके थे। पुराना जमाना था। अमन पसन्द बाबू लोगों के रेले के रेले अपनी-अपनी साइकिलों पर चढ़कर बाहर निकल रहे थे। दफ्तर से बाहर निकल कर पैदल चल रहे एक सफेद पोशाकधारी के साथ-साथ हम दोनों हो लिए। भैया ने नमस्ते करके उनका हल्का सा परिचय प्राप्त किया तो ज्ञात हुआ कि वे इस कार्यालय में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं और धरनीधर व्यास उनका नाम है। भैया ने पूछा-आप कहाँ जायेंगे? उनका उत्तर मिलने पर श्री धरनीधर जी ने हमारा परिचय पूछा और हमने बता दिया कि कल इन छोटे भाई की परीक्षा है और उसमें भाग लेने हम दिल्ली से आये हैं।

उनका अगला प्रश्न सुनकर हम दोनों के तोते उड़ गए, पसीने आ गए, मानों पैरों के तले से जमीन निकल गई। कहाँ ठहरे हो ? उन्होनें पूछा।

ओह! भैया बोले- हमने तो उस धर्मशाला का नाम और स्थान पता ही नहीं किया और जल्दी-जल्दी में कार्यालय देखने निकल पड़े। धरनीधर जी बोले-तुम कैसे आदमी हो ? धर्मशाला का नाम तो कुछ याद होगा ? कोई गली, मोहल्ला, कोई गेट, कोई चौपड, कोई बाजार आदि कुछ भी नही पूछा ? कैसे आदमी हो आप ? दिल्ली

के लोग इतने भोले होते हैं क्या ? अपनी भूल की प्रतिशतता को कम करने के लिहाज से भैया बोले- हाँ हम हरियाणा में बल्लभगढ़ के रहने वाले हैं।

धरनीधर जी हँसे और बोले-चलो दिल्ली के नहीं तो बल्लभगढ़ के ही सही। भाई! कुछ तो सोचा होता धर्मशाला छोड़ने से पहले। वे पुनः बोले-मैं आपकी क्या सहायता करुँ। चलिए, आज की रात मेरे घर पर बिताइए। रह लेंगे जो भी छोटा मोटा घर है। अब तक रामनिवास बाग आ चुका था। धरनीधर जी हमें वहाँ छोड़कर अपने घर के लिए कूच कर गये।

हमारे लिए अभूतपूर्व संकट आ पड़ा था। किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में हम दोनों असहाय भाई बंजारों की तरह जौहरी बाजार से होते हुए हवामहल के सामने खड़े हुए थे। एक दूसरे को हल्की-फुल्की शिकायत भरे स्वर में कह रहे थे-यार! तूने भी तो कुछ याद नही दिलाया कि हमें धर्मशाला का कुछ नाम गाँव नोट करना चाहिए। बड़ी हताश स्थिति में थे हम दोनों भाई! बार-बार भगवान को कह रहे थे हे प्रभु! आज कुछ मदद करो, इस संकट से उबारो। हम पूर्णरुपेण असहाय हैं। शहर में पूर्णतया अंजान हैं। बल्लभगढ़ पहुँच कर तेरा पाँच आने का प्रसाद चढायेंगे। सत्य है-भगवान सर्वत्र व्याप्त है। एक सज्जन के रुप में उसी समय शायद प्रभु का कोई पार्षद हमसे आकर बोला-मैं लगभग आधे घण्टे से तुम्हें खड़ा हुआ देख रहा हूँ। कितनी ही बसें तुम्हारे आगे से निकल गई। कितने ही रिक्शा वालों ने तुमसे पूछा-कहाँ जाओगे, तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। आप दोनों बड़ी असमंजस की स्थिति में लगते हो? क्या कारण है? कुछ बताओगे? मैं शायद आपकी कुछ सहायता कर सकूँ।

भैया ने बड़ी ही विनम्र वाणी से अपने अनुभवहीन होने की दास्तान उनको बताई। उन सज्जन को दिल्ली से आकर जयपुर में प्रवेश करने से लेकर सिंधी कैंप बस अड्डे तक पहुँचने का सारा रुट पता था और पता था कि चाँदी की टकसाल अर्थात हवामहल के स्टॉपेज के बाद बस अजमेरी गेट पर सवारियाँ उतारती है। भैया ने बतलाया- चाँदी की टकसाल के बाद बस एक खूबसूरत गेट पर रुकी थी। हम वहीं से चलकर बाजार-बाजार होते-होते आगे बढ़े थे। फिर एक चौपड़ सी आयी थी।

वे सज्जन बोले- फिर किधर गए? भैया बोले-हम फिर बाँए हाथ की सडक पर चले। सज्जन बोले-फिर? भैया ने कहा-फिर कोई दो या तीन गलियाँ छोड़ कर हम एक गली में घुसे। वहीं ये धर्मशाला थी। पता नहीं उसका नाम क्या था। गली में घुसकर धर्मशाला दाँये हाथ पर थी। वे सज्जन हमें अपने साथ लेकर चल पडे। बडी चौपड़

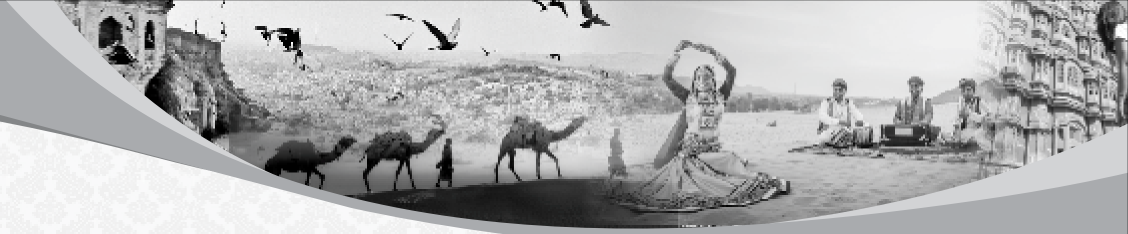

पार की, छोटी चौपड़ भी आई। आगे बढे और तीसरी गली (मिश्रा जी का रास्ता) में प्रवेश किया। छः सात घर पार करके दाँयी साइड की ओर इशारा करते हुए बोले-ये रही आपकी धर्मशाला। वृद्ध प्रबंधक को पहचान कर भैया के चेहरे पर जो खुशी प्रगट हुई, उसका वर्णन शब्दों में करना बहुत कठिन है। मानो खोया हुआ संसार वापस मिल गया। हम दोनों भाई उस सज्जन की ओर आभार भरी निगाहों से देखते रहे और बार-बार उनका धन्यवाद करते रहे। परहित सरिस धर्म नही भाई। भैया बोले-भाई साहब! भाई साहब! हम आपका कैसे प्रति-उपकार करें। ख़ैर! हम जीवन भर आपका सहयोग भुला नही पायेंगे। आप भगवान के फरिश्ते हैं।

ऐसा था मेरे जयपुर का अद्‌भुत चरित्र। शहर देखने और लोगों का व्यवहार जानने के बाद मन में कामना जगी-काश! मुझे यहाँ नौकरी मिल जाए तो जीवन धन्य हो जाए। प्रभु ने मेरी कामना पूर्ण की और 23 अप्रैल, 1970 से 30 अप्रैल, 2009 तक मैनें राजकीय सेवा में अपना योगदान दिया। मैं यहाँ जयपुर का होकर रह गया। जयपुर की संस्कृति के बारे में कितना भी लिखूँ और कितना भी उसे सराहूँ, कम है। कुछ छोटे-मोटे अपवादों को छोड़कर आज भी यहाँ की शालीनता, निजता, प्रियता, धर्मपरायणता एवं बोली की मिठास आदि अपने आप में अनूठी एवं निष्कपट है।

सुरेश चन्द मित्तल

(से.नि.) वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

- “समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।”

  - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।
- "विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"

  - वाल्टर चेनिंग।
- "जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।"

  - (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह।
- "हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है।"

  - (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह।
- “उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्‌ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।”

  - शारदाचरण मित्र।
- "हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"

  - राजेंद्रप्रसाद।

प्रेमानुभूति

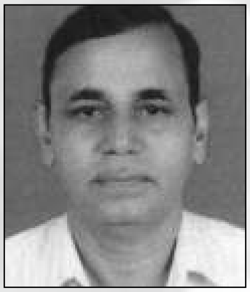

प्रेम की अनुभूति-प्रस्तुति, के विविध हैं भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।
प्रेम की अनुभूति-अनुपम, अकथ है।
सुखद हो या दुःखद, सबसे पृथक है।
प्रेम का संचार करता, है समर्पण भाव।
प्राण पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम की उत्पत्ति कब हो? कौन जाने?
प्रेम के आगे सभी हैं, हार माने।
प्रेम है निस्सीम, समेटे है समन्वय-भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम ही सुरभित करता है, जिन्दगी को।
प्रेम ही श्रृंगार देता, सादगी को।
प्रेम परिभाषित नही है, प्रेम है शुचि-भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम-सम्प्रेषण अमिट-सी, छाप है।
ह्रदय-वीणा में मधुर, आलाप है।
मौन-मुखर अभिव्यक्ति करती, प्यार आविर्भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम स्थापित करता है एकता,
प्रेम से मानव में आती पूर्णता।
प्रेम का स्पर्श करता है, सुखद सा भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम है शुचि-बन्ध, जो कलुषित नहीं है।
शुचि-प्रेम की संसार में, तुलना नहीं है।
प्रेम ही उत्पन्न करता है, सदा सद्भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम से माताऐं शिशु को, चूमती हैं।
प्रेम पाने को ये आँखें, तरसती हैं।
प्रेम है दैवीय गुण, प्रकृति निस्सृत भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

प्रेम से भौंरा कली पर, गूँजता है।
प्रेम से आमों पर गाती, कोकिला है।
प्रेम है सर्वत्र-व्यापक और शाश्वत-भाव।
प्राण-पयोनिधि में विचरती, प्रेम-रुपी नाव।।

तुलसी राम धाकड
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कौन छीन रहा है बच्चों का बचपन?

आज की हाईटेक सोसाइटी एवं हाई प्रोफाइल दुनिया में हर चीज मोबाइल एप पर उपलब्ध हो जाती है। हम कहीं पर नहीं जाते हुए या बन्द कमरे में भी पूरी दुनिया के नजारे देख सकते हैं। इसीलिए कहते हैं 'दुनिया मेरी मूट्ठी में'। ऐसे में इन उपकरणों से बच्चों को दूर रखना भी संभव नही है। बच्चों का दिमाग सामान्य व्यक्ति से 300 गुणा ज्यादा तेज चलता है। अतः इन उपकरणों को चलाने की योग्यता शायद वे जन्म से सीख कर ही आते हैं। माता-पिता या अभिभावकों की जागरुकता के बावजूद भी इन बच्चों को इन से दूर नहीं रख सकते परन्तु क्योंकि समय की मांग को देखते हुए इनके इस्तेमाल की समय सीमा जरुर तय कर सकते हैं। माता-पिता के न चाहते हुए भी आज दो साल के बच्चे भी टचस्क्रीन फोन चलाते हैं। स्वाइप करना, लॉक खोलना और कैमरे पर फोटो खींचना जानते हैं।

82 प्रश्नावली के आधार पर की गई एक रिसर्च से सामने आया कि 87 प्रतिशत अभिभावक प्रतिदिन औसतन 15 मिनट अपने बच्चों को स्मार्टफोन खेलने के लिए देते हैं जबकि 62 प्रतिशत ने बताया कि वे अपने बच्चों के लिए एप्स डाउनलोड करते हैं। मनोवैज्ञानिकों की मानें तो पिछले तीन वर्षों में तकनीक पर आश्रित लोगों की संख्या 30 गुणा बढ़ गई है। एण्ड्रायड या स्मार्टफोन के उपयोग की सीमा अधिकतम कितनी हो ? एक प्रश्न चिह्न हमारे सामने उपस्थित हुआ है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स के अध्ययन के अनुसार दो साल से कम आयु के बच्चों को किसी भी तरह की स्क्रीन से दूर रखना चाहिए। तीन-चार साल से कम उम्र के बच्चों के लिए वीडियो गेम खेलने से मनाही की गई है। तीन से पाँच वर्ष के बच्चों को अधिकतम केवल 30 मिनट प्रतिदिन तक गैजेट इस्तेमाल करने की अनुमति दी जानी चाहिए। ये गैजेट्स बच्चों का बचपन छीनते जा रहे हैं जिनके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं।

माइकल कोहेन ग्रुप द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि बच्चों के द्वारा दिन भर गैजेट्स लेकर बैठने से मोटापे की समस्या बढ़ रही है। आईपैड, लैपटॉप, मोबाइल आदि पर अति व्यस्त रहने से शारीरिक एवं मानसिक समस्याएँ पैदा हो रही हैं। अध्ययनों से सामने आया है कि यह टेक्नोलॉजी हमारे बच्चों को फायदा पहुँचाने की बजाय दीर्घकालीन नुकसान पहुँचा रही है क्योंकि विकसित हो रहे दिमाग पर

टेक्नोलॉजी के ओवर एक्सपोजर से बच्चों में सीखने की क्षमता में बदलाव आना, ध्यान न लगना, भोजन ठीक से न करना, आँखें खराब होना और स्वयं को अनुशासित व नियमित न रख पाना इत्यादि समस्याएं पैदा हो रही हैं। इतना ही नहीं, यह टैक्नोलॉजी बच्चों के मूवमेन्ट्स को सीमित कर देती है जिससे उनका शारीरिक विकास धीमा हो जाता है। यदि नन्हे शिशु ज्यादा समय स्मार्टफोन, टेबलेट और स्क्रीन वाले दूसरे उपकरणों से खेलने में बिताते हैं तो उनके बोलने में देरी भी हो सकती है। एक शोध से सामने आया है कि इन उपकरणों के 30 मिनट से ज्यादा इस्तेमाल करने से बोलने मे देरी की आशंका 49 प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

शोध में यह भी सामने आया है कि आजकल के बच्चों का रुझान टीवी की ओर भी तीव्रता से बढ़ा है लेकिन 80 प्रतिशत से अधिक बच्चे टेबलेट, स्मार्टफोन एवं कम्प्यूटर का प्रयोग अधिक कर रहे हैं क्योंकि ये आसानी से सभी जगह उपलब्ध हो जाते हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चों में इस तरह की आदत उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित करती है।

राजस्थान पत्रिका (दिनाँक 28.04.2019) के देश दुनिया परिशिष्ट में जेनेवा स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) की चेतावनी में बताया गया कि बच्चों की शारीरिक सक्रियता स्मार्टफोन की मात्र स्क्रीन टच करने से ही रुक जाती है। रिपोर्ट के अनुसार अक्सर देखा गया है कि रोते हुए बच्चों को चुप कराने के लिए माता-पिता स्मार्टफोन दे देते हैं जिसे वह हैरानी से ताकता रहता है। उनके द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार दो साल के शिशुओं को टी.वी., स्मार्टफोन या किसी भी तरह की स्क्रीन नहीं दिखानी चाहिए। यह सुझाव बच्चों की आँखें खराब होने के डर से नहीं बल्कि इसलिए दिया गया है ताकि बच्चे शारीरिक रुप से सक्रिय रह सकें।

बच्चों के द्वारा ये गैजेट्स (स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटोप, आईफोन इत्यादि) आज आवश्यकता से अधिक उपयोग में आने से बच्चे इनके गुलाम बनते जा रहे हैं। ये ही असल में बच्चों का बचपन छीन रहे हैं। इनसे बच्चों को बचाने की आवश्यकता है। अभिभावकों के चिन्तन करने एवं सावधान रहने की आवश्यकता है।

पदम चन्द गांधी
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नववर्ष के प्रथम दिन की सांझ

नववर्ष के प्रथम दिन की सांझ को
मैं एक पार्क में
गुलमोहर के पेड़ के नीचे
लकड़ी की बैंच पर बैठा हुआ
एक नया काव्य संग्रह पढ़ रहा था।
मैं काव्य संग्रह पढ़ते-पढ़ते
काव्य संग्रह की कविताओं और गीतों में
इतना खो गया कि
पार्क में आस पास
क्या हो रहा है,
इसकी मुझे बिल्कुल भी खबर नहीं थी।
यह सत्य है कि कविताऐं
इतनी मार्मिक, संवेदनशील एवं
हृदयस्पर्शी होती हैं कि
हमारा मस्तिष्क बिल्कुल स्थिर होकर
कविता की एक-एक पंक्ति,
कविता के एक-एक शब्द से
स्वयं को जोड़ने लग जाता है।
कविता की हर पंक्ति के अर्थ को,
कविता की हर पंक्ति के मर्म को
हमारा मस्तिष्क समझने लग जाता है।
मैं भी काव्य संग्रह को
पृष्ठ दर पृष्ठ पढ़ता जा रहा था।
काव्य संग्रह के हर पृष्ठ पर छपी
हर कविता का अपना एक अलौकिक रंग था,
अपना एक विशिष्ट कलेवर था।
अचानक मैनें पार्क में
दो छोटे-छोटे बालकों के
झगड़ने की आवाजें सुनी।
मैनें देखा तो पाया कि
एक बालक दूसरे बालक के द्वारा बनाए गए
मिट्टी के एक सुन्दर घरोंदे को
जिसमें सुन्दर-सुन्दर सुगन्धित फूल लगे
हुए थे को
तोड़ रहा है।
मैने देखा कि घरोंदा टूट चुका था,
घरोंदे में लगे हुए
सुन्दर-सुन्दर सुगन्धित फूल
इधर उधर बिखरे पड़े थे।
घरोंदा मिट्टी का एक ढ़ेर बन चुका था।
घरोंदे वाला बालक
दूसरे बालक को समझाते-समझाते
अन्ततः रो रहा था।
घरोंदे वाले बालक की आँखों से
आँसू बहते जा रहे थे,
वो बार-बार अपने नन्हे हाथों से
आँसू पोंछ रहा था,
लेकिन आँसू रुक नही रहे थे।
मैं गुलमोहर के पेड़ के नीचे बनी
लकड़ी की बैंच से उठा।

काव्य संग्रह को बैग में रखकर
दोनों बालकों के पास गया।
जो बालक अपने घरोंदे के टूट जाने से
रो रहा था,
उस बालक के आँसुओं को
मैनें मेरे रुमाल से पोंछा।
रोता हुआ बालक चुप हो गया।
घरोंदा तोड़ने वाले बालक को
मैनें प्यार से समझाया।
मैनें दोनो बालकों को
नववर्ष के प्रथम दिन की सांझ को
नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए
दोनों बालकों को
एक चॉकलेट और एक गुलाब का फूल
मेरे बैग से निकालकर दिया।
मैनें देखा
दोनों बालक मेरी नववर्ष की शुभकामनाओं,
मेरे चॉकलेट और मेरे गुलाब के फूलों से
खुश हो गए।
दोनों बालकों के बीच का द्वंद
समाप्त हो चुका था।
दोनों बालक प्यार से गले मिलकर
गुलाब के फूलों को हाथ में लेकर
चॉकलेट खाते हुए
एक दूसरे को
नववर्ष की शुभकामनाएं दे रहे थे।
मैं वापस गुलमोहर के पेड़ के नीचे
लकड़ी वाली बैंच पर
काव्य संग्रह पढ़ने चला गया।
मैनें काव्य संग्रह पढ़ते-पढ़ते देखा कि
दोनों बालक मिलकर वापस
मिट्टी का घरोंदा बना रहे थे।
दोनों सुन्दर-सुन्दर
सुगन्धित फूल लाकर
अपने प्यारे घरोंदे को सुन्दर बना रहे थे।
एक नये विश्वास एवं संकल्प का
प्रेम, सौहार्द एवं एकता का
पक्का एवं सुन्दर घरोंदा,
मैं नववर्ष की प्रथम सांझ को
मेरी आँखों के सामने
निर्मित होते हुए देख रहा था।
उन दोनों बालकों के
इस प्यारे एवं सुन्दर घरोंदे को
बनता हुआ देखकर
मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे।
आँसुओं की बूंदें मेरे गालों से बहती हुई
मेरे सामने रखे हुए काव्य संग्रह के
खुले हुए पृष्ठों पर गिर रही थी।

कैलाश आडवाणी
वरिष्ठ लेखाकार

कहत कबीर सुनो भाई साधो

समस्त सृष्टि जिसका गुणानवाद करते करते थक जाती है उसी महान शक्ति को सद्गुरू कबीर साहेब जी के नाम से जाना जाता है। आपने अपनी मधुर वाणी से कहत कबीर सुनो भाई साधो सोते हुए जीवों (हंसो) को सतयुग, द्वापर, त्रेता एवं कलयुग में आकर जगा रहे हैं, जो भी कहा वह पूर्ण रूप से स्पष्ट तथा निर्भिक रूप से संसार के सामने कहा-

कबीर माला काठ की फेरत बारम्बार।
मन को क्यों नहीं फेरता, जामें विषय विकार।।

साहेब जी जगत को समझाते हुए कहते हैं कि हे जगत के सभी जीवों यह काठ की माला बार-बार क्यों फेरते हो, इस मन को क्यों नहीं फेरते जो कि विषय विकार से भरा हुआ है अर्थात बाहर की शुद्धता किस काम की है। कबीर साहेब जी ने सदैव सुनों भाई साधों शब्दों से इस संसार के जीवों को चेताया, जगाया है और यह साहेब की महानता का ध्यौतक नहीं तो और क्या है? इसी बात की पुष्टि आदरेय आचार्य प्रकाश मुनि नाम साहेब जी ने रेवाडी में एकोत्तरीचौका एवं सत्संग समारोह (त्रिदिवसीय) में सभी कबीर पंथियों को बडी सरल सौम्य भाषा में समझाया तथा आगे यह भी कहा कि संसार के साथ जूझना होगा तथा संत महंतों के समक्ष झुकना-तभी हम साहेब के इस पवित्र नाम को ह्रदयांगम करके जीवन को सुखमय बना सकते है। विचार वाणी द्वारा सद्गुरु कबीर साहेब आगे फिर से कहते है कि-

गगन मण्डल के बीच में झलकत है इक नूर।|
निगुरा महल न पाइया, पहुँचे सद्गुरू पूर।।

कबीर साहेब जी ने जो देखा वहीं कहा, साहेब जी की कथनी करनी में भी अन्तर देखने को नहीं मिलता, यही तो सच्चे सदगुरू की जीवन्त पहचान है। मन को समझाते हुए कह उठते है कि -

भूले मन समझ के लाद लदनिया।
थोडा लाद बहुमत लादे, टूट जाय गरदनिया

प्यासा हो तो पानी पी ले, आगे देश न पनिया। भूले मन.......
भूखा हो तो भोजन करले, आगे हाटन बनिया
कहत कबीर सुनो भाई साधो, काल के हाटन कमनिया। भूले मन.....

कबीर साहेब जी इस चंचल मन को समझाते हुए कहते है कि - हे! मन तु उस सत्य को भूल गया, सोच समझ कर के कर्मों के बोझे को लाद (उठा), अधिक भार उठाया तो तेरी यह गरदन टूट जायेगी, यदि तुझे प्यास लगी हो तो प्यास को तृप्त कर ले, सुन आगे कोई देश और पानी की व्यवस्था नहीं है। ठीक इसी प्रकार यदि क्षुधा से ग्रसित हो तो भोजन कर ले, आगे न तो कोई बाजार है और ना ही तुझे कोई बनिया मिलेगा। अन्त में कबीर साहेब जी कहते है कि हे साधो भाई सुनो, जब काल आएगा तो तुझे अपनी कमान से नष्ट कर देगा इसलिए जो कहा जा रहा है उसे साध, बिना साधे साधना कुछ भी नहीं है, साधो का वास्तविक अभिप्राय है कि जो कहा गया है उसको पूरी तरह अमल में लाना-इसी बात को कबीर साहेब जी ने भ्रातृत्व भावना सहित संसार को समझाया है, यही समभाव समता का प्रतिक है। साहेब जी आगे अपनी वाणी में फिर कहते हैं-

रहना नहीं देश विराना है
यह संसार कागज की पुडिया, बूंद पडे गल जाना है
यह संसार झाड़ और झांकर, उलझ पुलझ मर जाना है
यह संसार ओस का मोती, हवा चले ढल जाना है
कहे कबीर सुनो भाई साधो, सदगुरू नाम ठिकाना है।

उपरोक्त वर्णित साखी शबद से भी स्पष्ट होता है कि- हे मानव बिना सदगुरू जी की शरण के संसार में कहीं भी ठौर ठिकाना नहीं है, अतः अच्छी तरह जान ले । संत सम्राट अथवा संत शिरोमणी सदगुरू कबीर साहेब जी को ही कहा जाय या है तो इसमें कोई भी अतिशयोक्ति नहीं है, इनमें विनम्रता, शिष्टता, सभ्यता, निर्भिकता, सौम्यता, सादगी और यूँ कहा जाय कि सौष्ठवता कूट कूट कर भरी हुई है। सारे जीवों को सत्यमार्ग पर चलना सिखाया है, आगे सदगुरू कबीर साहेब बड़े सहज भाव से अपनी बात मन को समझाते हुए कहते है यथा-

मन मत्तंग माने नहीं, जब तक खता नखाय।
जैसे विधवा स्त्री, गरभ रहे पछिताय।।

बिना सदगुरू की शरण में आए हुए हे मनुष्य, तेरी उपरोक्तानुसार ही गति होगी, फिर पश्चाताप करने से कुछ भी हाथ नहीं आने वाला है। संतों ने भी अपने अनुभव से कहा कि समय पर तीन महत्तवपूर्ण बातों का ध्यान रखना परमावश्यक है। उदाहरणार्थ-

क. समय का सच्चा सदगुरू साहेब जी
ख. समय का राजा तथा तीसरा
ग. समय का वैध (चिकित्सक)

यह तीनों ही हमारे जीवन के प्रमुख भाग है। इनके अभाव में जीवन सहज सुलभ इस संसार में नहीं चल सकता, अतएवं इन्हें जान लेना नितान्त आवश्यक है। सत्यता की बात बताते हुए पुनः कबीर साहेब जी अपनी वाणी में कुछ यूँ कहते हैं कि-

सारवस्तु वंसनि के पासा।
कहें कबीर सुनो धर्मदासा।।

इससे यह पूरी तरह भासित हो रहा है कि हे धर्मदास जी ध्यान से सुनो, यह सार वस्तु (शब्द) वंस बयालीस के पास ही मिलेगा, अन्यत्र कहीं भी नहीं। इस पर हम सभी कबीर पंथियों को बड़ा सतर्क तथा ध्यान देना पडेगा कि केवल एक वंश ही नहीं वरन् पूरे बयालिस वंशों को पूर्ण समर्पण करना होगा, तभी उस सत पुरूष का सान्निध्य हमें प्राप्त हो सकेगा, अन्यथा कालनिरंजन अपने आधिपत्य में समाहित कर सकता है, इसमें तनिक भी संदेह किसी भी कबीर पंथी को नहीं करना चाहिए। साहेब फिर समझाते है-

कबीर वाणी अटपटी, झटपट लखी न जाय।
जो कोई झटपट लखे, सब खटपट मिट जाय।।

चारों युगों में कबीर सदगुरू जी को अल्प हंस ही शरणागत हुए है जैसा कि उपर्युक्त साखी से जानकारी मिलती है। कबीर साहेब जी कहते है कि मेरी वाणी बडी अटपटी है इसे कोई भी जीव इतनी सरलता से नहीं जान सकता, जो इसे जान लेगा उसकी सभी प्रकार से कल्पना एवं द्वंद का सम्पूर्ण निवारण हो जाएगा। सभी कबीर पंथियों को अपनी रहनी, गहनी वाणी पर पूर्ण सफलता प्राप्त करनी होगी और तो और इसे महामंत्र जानकर पूरा पूरा भरोसा करना है, साथ में साहेब धर्मदास जी की इस वाणी पर चिंतन मनन करना होगा-

साहेब चितवौ हमरी ओर
हम चितवें, तुम चितवौ नाहीं, तुमरो ह्रदय कठोर
औरन को तो और भरोसो, हमें भरोसों तोर।।

अंत में हम सब विनती करें कि हे! साहेब जी तुम हमारे हो और हम तुम्हारे, इन्हीं शब्दों सहित, सादर साहेब, बंदगी साहेब।

डॉ. कृपा शंकर शर्मा "अचूक"
अतिथि रचनाकार

ये कैसी माँ !

रीता के पिताजी उस दिन जब घर आये तो बहुत खुश दिख रहे थे, आते ही उन्होनें सबको एक-एक लड्डू खिलाया। वैसे लड्डू खिलाने की बात से प्रसन्नता का कोई संबंध नही था क्योंकि वे प्रायः बच्चों के लिए कुछ न कुछ लाते ही रहते थे। खुशी तो आज उनके चेहरे पर झलक रही थी। माँ से बर्दास्त नही हुआ तो उन्होनें पूछ ही लिया-"क्या बात है जी? लगता है कारु का खजाना मिल गया है जो इतना खुश हो।"

“खुशी की तो बात है ही। आज मैनें अपनी रीता का विवाह एक बड़े धनी और संस्कारी घर में तय जो कर दिया है”- पिताजी ने उत्तर दिया। सुनकर सभी लोग बहुत खुश हुए। सिवा उसके, खुश तो वह भी थी, लेकिन अपनी शादी की बात सुनकर कुछ शर्मा सी गई थी। साथ ही माता-पिता का घर छूटने का ग़म भी सताने लगा था।

शाम को जब सभी लोग एक साथ बैठे तो पिताजी ने विस्तार से बताया। उसके भावी ससुर पुलिस-इंस्पेक्टर थे। बड़ा बेटा प्रखण्ड कार्यालय में सहायक था। छोटा बेटा हाल ही में व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुआ था। आज के इस दौर में ऐसा घर-वार मिलना असम्भव है। ससुराल में कई सदस्य थे। ननद, देवर, जेठ-जिठानी और उनके बच्चे। खुशी की बात यह थी कि उसे दादी सास का आशीर्वाद भी मिलने वाला था। उनकी कोई माँग भी नही थी। बस एक सुशिक्षित संस्कारी बहू चाहिए थी, जो परिवार को जोड़कर रखे। घर की क्या कहें? वह तो एक सुन्दर विशाल बंगला था। घर की महिलाऐं ही मिल-जुलकर काम करती थी। किसी नौकर को घर के काम करने की अनुमति नही थी। एक बात और पता चली कि दादी के बाद जेठानी को बहुत सम्मान मिलता था, क्योंकि वह महिलाओं में सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझदार महिला थी। तभी एक दिन उसके भाई उसे विदा कराने आये, पहली ही होली का होलिका दहन नव-वधू को नहीं देखना चाहिए। माँ-बहिनों ने उससे ससुराल की सारी बातें पूछी, उसने हँसकर सब बता दिया। तभी माँ ने पूछा- “बेटा, तुम्हें यदि कहीं घूमने जाना हो तो जेठानी से पूछना पड़ेगा, उत्तर दिया, “बिल्कुल” परन्तु एक महिला को पूर्ण स्वामित्व तभी मिलता है जब वह अपनी रसोई की मालकिन हो। अपनी रसोई, अपना पति, अपने बच्चे और अपनी मर्जी से भोजन बनाना और खिलाना। आजकल संयुक्त परिवार को कौन कब तक ढोता है।” अतः मेरी बात मानो अपनी रसोई किसी तरह अलग कर लो। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। दूसरे दिन उसने सबसे बात की, परन्तु माँ से कुछ न बोली। माँ के पूछने पर उसने कहा-“आप कैसी माँ हो” जो मेरे स्वर्ग जैसे घर में आग लगाने की सलाह दे रही हो, जो माँ शादी के बाद बेटी की गृहस्थी में हस्तक्षेप करती है वह

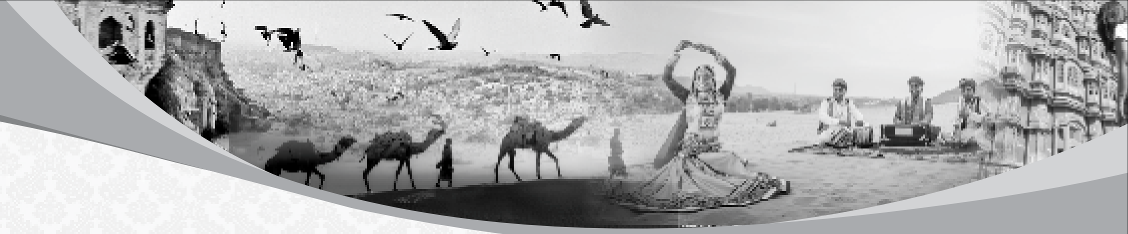

उसकी सबसे बड़ी दुश्मन है, उसकी बेटी का पारिवारिक जीवन कभी सुखमय नही हो सकता। मुझे ऐसी माँ से बात नही करनी है। आप यहाँ से चली जाइये।

उसकी माँ जाते-जाते बोली-"मुझे क्षमा करना बेटी, मैं अपनी ही दी गई शिक्षाओं को भूल गई थी. आज मुझे गर्व हो रहा है कि मैं तुम्हारी माँ हूँ। सदा सुखी रहो।" वह अपनी माँ के गले लग गई और रोते हुए बोली-"मुझे क्षमा कर दीजिए। मुझे आपसे ऐसे बात नहीं करनी चाहिए थी।" रोते हुए माँ-बेटी दोनों के मन की कलुषित भावनाएँ धुलती जा रही थी और दोनों के ही जीवन में एक नया सवेरा दस्तक दे रहा था।

लवली शर्मा
अतिथि रचनाकार

हिन्दी में कार्य करने को बढावा देने हेतु हमें क्या करना चाहिएः-

- छोटी छोटी टिप्पणियां लिखने का प्रयास करें।
- शब्दों के लिए अटके नहीं।
- आम शब्दों का प्रयोग करें।
- वैज्ञानिक, तकनीकी एवं कार्यालयीन शब्दावली का प्रयोग करें।
- अशुद्धियों से घबराइये नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब प्रारम्भ करें।
- हिन्दी में हस्ताक्षर करें।
- रजिस्टरों, सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिन्दी में करें।
- फाइलों के ऊपर विषय हिन्दी-अंग्रेजी (द्विभाषा) में लिखें।
- हिन्दी भाषा राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखें।
- कोड़ मैनुअल द्विभाषी में बनवाएं।
- हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में देवें।
- हिंदी में सोचकर, हिन्दी में ही लिखें।
- अपने साथियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा देवें।
- हिन्दी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का भरपूर फायदा उठायें।
- सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय कर हिन्दी में लिखने का प्रयास करें।
- हिन्दी प्रतियोगिताओं में बढ-चढकर हिस्सा लेवें।

कार्यालय में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दृश्य

हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत आयोजित की गयी विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं पुस्तक प्रदर्शनी के दृश्य

कार्यालय में हिंदी पखवाडा के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए अधिकारीगण

कार्यालय पत्रिका "लेखापरीक्षा अर्चना" के अंक-11 का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षे.ले.प.) श्री आर.जी.विश्वानाथन

सद्भावना दिवस पर शपथ लेते हुए कार्यालय के अधिकारीगण एवं कार्मिक

तिमाही कार्यान्वयन समिति की बैठक

कार्यालय में आयोजित किए गए चिकित्सा कैम्प का दृश्य

क्या रक्षिता भाग गई ?

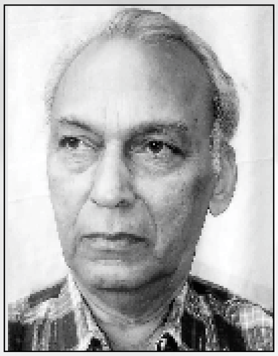

रक्षिता हमेशा समय पर ऑफिस आने वाली लड़की थी लेकिन आज दस बजने के उपरान्त भी जब वह ऑफिस नही आई तो सारे हॉल में शोर मच गया, क्या रक्षिता भाग गई? ऑफिस के सभी साथी कर्मचारियों का विचार था कि कुछ दिनों से उसके व्यवहार में काफी परिवर्तन हो गया था। वह वास्तव में बड़ी हँसमुख, खुश मिजाज लड़की थी जो अब सुस्त और गुमशुम रहने लगी थी। लोगों का विश्वास था कि उसका कहीं कोई चक्कर तो नही चल रहा है जिसके कारण उसके स्वभाव में अचानक परिवर्तन आ गया था। उसके बहुत ही नजदीकी रिश्तेदार ऑफिस में काम करते थे। लोग उन्हें शर्मा जी के नाम से ही जानते थे। रक्षिता के पिताजी ने शर्मा जी से कहकर उसे ऑफिस में लगवाया था क्योंकि रक्षिता के कई बड़ी बहनें थी और वह सबसे छोटी थी, इसलिए उसकी अपनी तनख्वाह की रकम से उसकी शादी में काफी अधिक मदद मिल सकेगी।

शर्मा जी गम्भीर कॉलोनी में सरकारी आवास में रहते थे जहाँ उनके अपने परिवार के रहने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं था इसलिए अपने पास वाली कॉलोनी में अपने एक जानकार के घर में एक छोटा कमरा रक्षिता को रहने के लिए किराये पर दिला दिया था। उस मकान मालिक के परिवार में एक आवारा किस्म का लड़का था। उसने रक्षिता को देखा तो उस पर प्यार के डोरे डालने शुरु कर दिए। कुछ समय बाद उन दोनों में प्यार हो गया, तब उन दोनों ने निश्चय किया कि आने वाले दशहरे वाले दिन दोनों आर्य समाज मंदिर में जाकर शादी कर लेंगे और बाद में दोनों साथ-साथ रहा करेंगे। न जाने किस आवेश में आकर रक्षिता ने यह निश्चय तो कर लिया लेकिन बाद में उसने सारी स्थिति पर गौर किया तो उसे लगा कि उसका यह इरादा उसके घरवालों और शर्मा जी के लिए हितकर नही होगा। एक ओर तो घर वालों की बदनामी होगी और दूसरी ओर शर्मा जी की भी फजीहत होगी। अतः यह शादी किसी प्रकार भी हितकर नही होगी।

इस दुविधा में उसकी मानसिक और शारीरिक स्थिति खराब रहने लगी। यही कारण था कि वह कभी ऑफिस में जल्दी और कभी काफी देर से आने लगी। उस दिन जब वह ऑफिस में काफी देर से आई तब लोगों ने यह क्यास लगाया कि वह भाग गई है, लेकिन जब वह ऑफिस आई तब काफी परेशान थी। ऑफिस में वह मेरे पास वाली सीट पर बैठती थी, इसलिए कई बार उसने अपने मन की बात मुझ से कहनी चाही, पर मैनें उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया। उस दिन उसकी मानसिक स्थिति को देखकर मुझे उस पर काफी दया आई और मैने सोचा कि

उससे उसकी दयनीय स्थिति के बारे में पूछूं कि उसे क्या परेशानी है। अतः जैसे ही उसने अपनी मेज पर फाइलें रखी और काम शुरु करने ही वाली थी कि मैने उससे कहा, "रक्षिता, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। तुम अपने कॉमन रुम की ओर आ जाना, मैं वहाँ तुम से कुछ बातें करुँगा।" "बहुत अच्छा" कह कर वह अपनी फाइलों को ठीक करने लगी और मैं अपनी सीट से उठकर कॉमन रुम की ओर चल दिया। थोड़ी देर में रक्षिता भी वहाँ आ गई। मैंने उससे पूछा, "रक्षिता एक बात बताओ कि अगर हमारा कोई साथी आत्महत्या जैसा पाप करने जा रहा हो तो हमें क्या करना चाहिए?" "हमें उसे बचाना चाहिए और उसे रोकना चाहिए", उसने कहा। तो तुम सावधान हो जाओ, तुम्हें किसने शर्मा जी की इज्जत से खिलवाड़ करने का अधिकार दिया है। उन्होनें तुम्हारी नौकरी लगवाई और तुम अपने व्यवहार से उनकी बेइज्जती करने पर तुली हुई हो। मेरा सवाल सुनकर उसकी आँखें नम हो गई और वह रुंधे गले से बोली,"मैं क्या बताऊं, पता नहीं, मैं कैसे मकान मालिक के लड़के के चंगुल में फंसती जा रही हूँ। मैं तो उसके इस जाल से निकलना चाहती हूँ पर कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। मैं क्या करुँ, कुछ समझ में नही आता।" अच्छा तो तुम वास्तव में उसके चंगुल से निकलना चाहती हो तो मैं तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हूँ। मैने उसे ढ़ाढस बंधाते हुए कहा। मैने उसे भरोसा दिलाया कि तुम्हें कुछ नही होगा। परसों दशहरा है, उसने मुझे कहा था कि दशहरे वाले दिन वह मुझे आर्य समाज मंदिर में ले जाएगा और वहाँ शादी करने के बाद मुझे अपने घर जाने देगा और बाद में मुझे वो अपने घर ले जाएगा।

स्थिति वास्तव में विकट थी, फिर भी मैंने उसे दशहरे वाले दिन ऑफिस आने को कहा और कहा कि मैं अपने कुछ साथियों से इस मसले पर विचार विमर्श करुँगा और उनकी मदद से तुम्हें कुछ भी नहीं होने दूँगा। यह सुनकर वह अनुभाग में चली गई और मैनें अपने मित्र पवन कुमार से यह समस्या बताई और उसकी सलाह एवं मदद माँगी। इस पर पवन ने कहा कि मसला काफी संगीन है फिर भी रक्षिता के रिश्तेदार शर्मा जी को विश्वास में लेकर ही कुछ किया जाए तो ठीक रहेगा, जिसे सुनकर उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ, फिर भी उन्होनें लड़की को बचाने में मदद का वायदा किया।

दशहरे वाले दिन रक्षिता ऑफिस में लगभग ठीक समय पर आई। वह बड़ी शंकित और डरी हुई सी लग रही थी। शाम के पाँच बजने वाले थे, लोग अपने घरों को जाने की तैयारी में लगे थे। इतने में पवन कुमार अपने चार-पाँच साथियों को लेकर मेरे पास आया और मुझ से कहा, "रक्षिता रानी पार्क होते हुए अपने घर की ओर जाएगी, उस वक्त दो जने उसके दाँये-बाँये अपनी-अपनी बाईक पर उसे गार्ड करते हुए चलेंगे। बाकी हम सब उसके साथ-साथ

पीछे-पीछे चलेंगे। रक्षिता रानी पार्क से होते हुए गम्भीर कॉलोनी अपने घर की ओर चली जाएगी। अगर रास्ते में किसी ने उसके साथ किसी तरह की छेड़खानी करने की कोशिश की तो हम उससे अच्छी तरह से निपट लेंगे, इसके लिए हमारे पास हथियार भी हैं, मौका आने पर उसका इस्तेमाल भी कर सकेंगे।"

रानी पार्क होते हुए जब एक धर्म स्थल के पास पहुँची तो एक जीप पर दो लड़के आए और रक्षिता की ओर रुख करने की कोशिश की पर रक्षिता के साथ चल रहे लड़कों ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। उनकी मंशा रक्षिता को अगवा करने की थी। बाईक पर सवार एक लड़के ने जीप के सामने अपनी बाईक खड़ी करके जीप को रोक दिया और इसके बीच रक्षिता को मौका मिल गया और वह तेजी से अपनी साईकिल भगा कर अपने घर की ओर चली गई। जीप वाले लड़कों ने कुछ उधम मचाने की कोशिश की । इसी बीच वहाँ लोगों की भीड़ जमा होनी लगी तो जीप वाले लड़कों ने वक्त की नजाकत को देखते हुए वहाँ से भाग लेने में ही अपनी भलाई समझी और वे वहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो गए। इस प्रकार से रक्षिता को अपने घर सुरक्षित पहुँचा कर हम लोग भी अपने-अपने घरों की ओर चल दिए।

कुछ समय बाद रक्षिता की शादी हो गई, तब उसने एक दिन मुझसे कहा कि मैं आप को राखी बांध कर भाई बनाना चाहती हूँ, मैनें उससे कहा कि जब तुमने मुझे भाई कहा था तो भाई तो मैं उसी वक्त से हो गया हूँ, फिर भी अगर तुम राखी बांधना ही चाहती हो तो मुझे कोई ऐतराज नही है, पर देखो रिश्ते बनाना तो आसान होता है लेकिन रिश्ते निभाना बहुत कठिन होता है। फिर भी राखी वाले दिन उसने मुझे राखी बाँध दी। राखी के बंधन मुश्किल से दो-तीन साल चले होंगे, उसके बाद शायद उसे याद ही नही रहा होगा कि जिन्दगी बदलने वाला कोई हादसा उसकी जिन्दगी में हुआ भी था।

सर्विस में एक वक्त ऐसा भी आता है कि जब प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को सेवा निवृत्त होना पड़ता है। मुझे भी एक दिन सेवा निवृत्त होना पड़ा। कुछ साल बाद रक्षिता को भी सेवा निवृत्त होना पड़ा। एक दिन मैं ऑफिस में अपनी पेंशन का चैक लेने गया तो रक्षिता को वहाँ अचानक देखकर पता चला कि वह भी सेवानिवृत्त हो गई है और अपनी पेंशन का चैक लेने आई है। थोड़ी देर में पवन कुमार भी वहाँ आ गया। हम तीनों लम्बे समय बाद एक साथ मिले थे। सोचा था कि कुछ बातें होंगी, पर पवन कुमार को देखते ही रक्षिता वहाँ से चली गई। पवन ने अपने मजाकिए लहजे में एक फिल्मी गीत की एक लाईन जोर से गुनगुनाई कि मतलब निकल गया तो पहचानते नहीं। वहाँ खड़े सभी लोग हँसने लगे।

बिशन लाल अनुज

(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

माँ की वन्दना

सबसे पहले तुमको देखा, जग में आँख खुली जब माँ
ईश्वर का प्रतिरुप तुम्हीं हो, उसको तुझमें देखा माँ

तुमने दिया यह अमूल्य जीवन, प्रथम गुरु भी तुम्ही हो माँ
कैसे वन्दना करुं तुम्हारी, शब्द कहां से लाऊं माँ

जब से होश संभाला, देखा तुमको सेवा करते माँ
किस मिट्टी की बनी हो जाने, कभी नहीं तुम थकती माँ

अरुणोदय से पहले जगती, लगता जैसे नहीं सोई माँ
संवार के सारा घर आंगन, स्नान ध्यान कर लेती माँ

करती जाती ईश वन्दना, मधुर स्वर में गाती माँ
ठाकुर जी की सेवा कर, फिर चौका बरतन करती माँ

किसको कब जाना है बाहर, इसे कभी नहीं भूली माँ
सबको मन का करा कलेवा, बचा खुचा खा लेती माँ

थोड़ा सा सुस्ता लेती जब, सब होते घर के बाहर
पर चैन कहां उस मात ह्रदय को, राह देखे हर आहट पर

जब तक सब घर नहीं आ जाते, दरवाजे को ताकती माँ
और सभी के आ जाने पर, साँस चैन की लेती माँ

सहमें-सहमें देख कर चेहरे, झूठा गुस्सा करती माँ
ऊपर से तो झिड़की देती, अन्दर से हर्षाती माँ

जल्दी से परोस के खाना, सबको साथ बिठाती माँ
कर-कर के मनुहार सभी की, स्वयं तृप्त हो जाती माँ

आज तलक भी नहीं भूले हैं, तेरे हाथ का खाना माँ
चाहे जितने स्वाद मिले पर, तुमसा कोई न होगा माँ

घूम-घूम कर दुनिया देखी, वन-उपवन और झरने माँ
तेरे आँचल की सुखद छाँव सा, नहीं कोई ठिकाना माँ

ऐसा अदभुत रुप बनाया, हरदम हँसती रहती माँ
अपने सारे कष्ट छुपा कर, स्नेह बांटती रहती माँ

इस जीवन की कठिन डगर को, तुमने सुगम बनाया माँ
कैसे भूलें उन रातों को, तुम जगती हम सो जाते माँ

संस्कार जो तुमने दिए माँ, नही भूले हम जीवन भर
कैसी भी कठिनाई आई, चलते रहे कर्तव्य पथ पर

हुई प्रभु की इच्छा ऐसी, बिछुड़ गई तुम हमसे माँ
करते हैं यह दुआ नित्य, हर जन्म में हो तुम जैसी माँ

ईश्वर का वरदान है माँ पर, साथ नहीं जीवन भर का
कितने भाग्यशाली होते हम, सदा अगर तुम रहती माँ

नागरमल यादव

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के तहत (i) केन्द्र सरकार आदि के संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञप्तियाँ (ii) संसद के सदनों में रखे जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात (iii) केन्द्र सरकार आदि की संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञापत्र, सूचना, निविदा प्रपत्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी किए जाने हैं।

प्लास्टिक एवं उसके दुष्प्रभाव

विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी इस बार भारत को मिली है और हमारे कंधों पर अब दुनिया को प्लास्टिक से मुक्त बनाने की जिम्मेदारी है। इस अंक में हम प्लास्टिक के जानलेवा प्रभावों के बारे में चर्चा करेंगे।

प्लास्टिक हमारी जिंदगी का आवश्यक हिस्सा बन चुका है। प्लास्टिक ने हमारा जीवन जितना आसान किया है उससे कई गुना हमारे सामने मुश्किलें खड़ी की हैं। प्लास्टिक का प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में जाने-अनजाने करते हैं। खासकर वह प्लास्टिक जिसका इस्तेमाल सिर्फ एक बार करके फेंक दिया जाता है जिसमें थैलियाँ, पैकेजिंग और पानी की बोतलें शामिल होती हैं। अगर हमारे द्वारा प्लास्टिक के अत्यधिक प्रयोग को रोका नही गया तो वो दिन दूर नहीं होगा जब हमारी पृथ्वी विनाश के कगार पर होगी।

❖ **जीवन शैली में प्लास्टिक का समायोजन**

हर व्यक्ति अपनी दिनचर्या में किसी न किसी रुप में प्लास्टिक का उपयोग कर रहा है। हमारे दिन की शुरुआत ही प्लास्टिक के टूथब्रश, उसके बाद नहाने के लिए प्लास्टिक की बाल्टी इत्यादि से होती है। उसके पश्चात प्लास्टिक की प्लेट में नाश्ता एवं जिस वाहन से दफ्तर जाते हैं उसमें भी अच्छी मात्रा में प्लास्टिक का उपयोग होता है। हमारा खाने का टिफिन, काम करने के लिए कम्प्यूटर, की बोर्ड ये सब कुछ प्लास्टिक के ही उत्पाद हैं।

प्लास्टिक की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि यह सरलता से उपलब्ध है। कम कीमत व अधिक टिकाऊ, वजन में हल्का होने के साथ ही इसे किसी अन्य आकार में आसानी से ढाला जा सकता है। न तो ये आसानी से टूटता है न ही गलता है। इसकी ये सब विशेषताऐं ही इसके अधिक उपयोग का कारण हैं एवं यही अधिक उपयोगिता मानव स्वास्थ्य एवं पारिस्थितिकी के लिए घातक सिद्ध हो रही है।

❖ **प्लास्टिक के दुष्प्रभाव**

जैसे-जैसे व्यक्ति ने प्लास्टिक का अधिक प्रयोग करना प्रारंभ किया है वैसे-वैसे ही इससे जनित समस्याएं भी बढती गई हैं। पशु-पक्षी, जलीय जीव, पारिस्थितिकी तंत्र सब इसकी कीमत चुका रहे हैं। इसकी भरपाई कर पाना अत्यंत दुष्कर है। विशेष रुप से समुद्री जीवन को इससे सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। समुद्र में थैली, प्लास्टिक की बोतलें, बच्चों के प्लास्टिक खिलौने एवं पुरानी मशीनरी के पार्टस इत्यादि की परत छा गई

है। पानी के साथ बहकर आये मलबे के ढेर में प्लास्टिक सर्वाधिक मात्रा में आता है। यदि यही स्थिति रही तो समुद्र में जीवों की तुलना में प्लास्टिक के कचरे का अनुपात बहुत अधिक बढ जाएगा। हमारा भविष्य पूरी तरह प्लास्टिक के ढेर में दफन होने जा रहा है।

❖ **प्रतिबंध आवश्यक क्यों?**

प्लास्टिक के दुष्प्रभावों से बचना आज के परिपेक्ष्य में चिन्ता का विषय बना हुआ है क्योंकि इसका प्रभाव अन्तिम रुप से जलवायु एवं पर्यावरण पर पड़ता है। प्लास्टिक जैविक रीति से नष्ट होने योग्य नहीं है। प्रथम चरण में बन्द करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाये जा रहे हैं।

मेक्रोप्लास्टिकः- समुद्र में बड़े ढेर के रुप में तैर रहे हैं।

माइक्रोप्लास्टिकः- ये जल में घुलकर हमारी खाद्य श्रृंखला को दूषित करते हैं।

❖ **प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए किये गए प्रयासः-**

भारत के 22 राज्यों एवं संघीय क्षेत्रों ने एकल यूज प्लास्टिक के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। हाल ही में पांडिचेरी ने एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। लोगों ने स्वेच्छा से इस समस्या से निजात पाने के लिए प्लास्टिक का उपयोग कम किया है। भारत ने 'बीट प्लास्टिक पोल्यूशन' नाम से एक मिशन चलाया है जिसे विश्व भर में सराहना प्राप्त हो रही है। हमारी सरकार द्वारा यह संकल्प लिया गया है कि 2022 तक एकल उपयोग वाले प्लास्टिक का पूर्ण उन्मूलन कर दिया जाएगा।

❖ **प्लास्टिक उपयोग कम करने के प्रभावी कदमः-**

प्लास्टिक कैरी बैग के इस्तेमाल को बन्द कर इको-फ्रेंडली या कपड़े के बैग का इस्तेमाल करें। बाहर जाते समय एक कपड़े का बैग साथ लेकर निकलें। प्लास्टिक के खाने के बर्तनों का उपयोग बंद करें। बच्चों के खिलौने प्लास्टिक के स्थान पर लकड़ी या अन्य कपड़े इत्यादि से बने हुए खरीदें। पानी की प्लास्टिक की बोतलें ट्रेन या बस में न खरीदकर घर से ही अन्य पदार्थों की बोतल का प्रयोग करें। प्लास्टिक की चीजें इस्तेमाल लेने के बाद सही जगह डस्टबिन में डालकर वातावरण प्रदूषित होने से बचाएं। प्लास्टिक अवशिष्ट के उचित प्रबंधन में सहयोग करें। स्टोरेज के लिए प्लास्टिक उत्पाद का प्रयोग न करें। काँच या मिट्टी के बर्तन उपयोग करें। सजावटी सामान व रसोई के डिब्बे प्लास्टिक के न खरीदें ।

शिवपाली खंडेलवाल
स.ले.प.अ.(डीपी सैल-ईएस-II)

भागीरथी

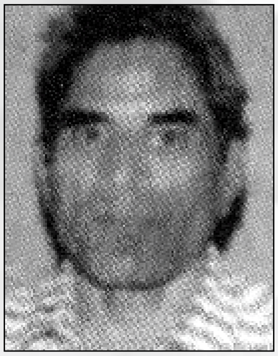

हे भगवती! माँ गंगा! आप देवगणों की ईश्वरी हैं, तीनों लोकों को तारने वाली, आपकी तरंगें निरंतर चमकती रहती हैं। उनका रुप विरल-तरल है, वे सैकड़ों बार उठती गिरती रहती हैं।

आप महादेव के सिर पर विहरती रहती हैं। आपका रुप अद्भुत है। भगवान ने सर्वश्रेष्ठ रचना आपकी ही की है। हे जगतारिणी! आप सभी प्राणियों को सुख देती हो। दीन-हीन से अति स्नेह है आपका, एक पल में ही उसका घर भर देती हो, आपके निर्मल जल का वर्णन सभी शास्त्र करते हैं। वेदों में भी आपकी महिमा अंकित है, अपना ही पुत्र मानकर मेरी रक्षा करें। जो भी गंगा माँ के द्वार पर जाता है वह अपनी झोली भरकर ही लौटता है। विधाता ने जैसी सुंदर रचना आपकी की है वैसी संसार में /तीनों लोकों में किसी की नहीं है। मैं अज्ञानी जन्म से ही आप की महिमा जान नही पाया, आप मेरी रक्षा करें। आप सरिता रुप में श्री हरि के चरणों का चरणोदक हैं। कृपया, मुझे अपना पुत्र ही मानें। यदि आप धरती पर अवतरित नही होती तो संसार के पाप कैसे धुलते? आप मुझे भवसागर से पार करें।

गंगाजल जो भी पियै पाइ परमपद हाल।
कृपा तिहारी चाहतौ कवि बनवारी लाल।।

भक्ति तिहारी लीन जो, ताइ न लखि यमराज।
को जग गंगा मात सम? पल में सारति काज।।

तीनों लोकन में हो, तुम्हीं पतित पावनी मात।
कन्या तुम जहनु मुनी की, तुम लखि जगत सिहात।।

माँ तुम जननी भीष्म की, कल्पलता या लोक।
दरस-परस-स्नान ते, दूर होत सब शोक।।

जो प्रणाम तुमकूँ करै, चिंता चित्त न ताहि।
अस जननी कूँ छोड़ि कें, खोजत फिरिए काहि।।?

हे माँ! आप वनिता के समान चंचल हैं और समुद्र के साथ विहार करती हैं। जितने भी पुण्य प्रवाह हैं वे सारे के सारे आपके सामने क्षुद्र हैं। जो व्यक्ति इस सरिता में स्नान कर लेता है उसका धरा पर आगमन ही छूट

जाता है, यानी वह पुनः गर्भ में प्रवेश नहीं करता। ये देवनदी अद्‌भुत है। इसकी महिमा सिर्फ भगवान शंकर ही जानते हैं। ये पाप नासनी, पाप से बचाने वाली, भक्त की नर्क के गर्त से रक्षा करने वाली है किंतु सबसे पहली शर्त ये है कि भक्त इनके चरणों की शरण ले।

हे भागीरथी! आप सभी को सुख बाँटने वाली, सुख देने वाली और आश्रय प्रदान करने वाली हो, इस धरा की मालकिन हो और गो लोक की भगवान हो। हे भगवती! मुझ सहित, सम्पूर्ण संसार के पाप-ताप-संताप हरण कर लीजिए। साथ ही निवेदन है कि कुमति-कलापों का भी अंत करने की कृपा करें।

हे माता! आप त्रिभुवन की सार और वसुधा का हार हैं, यह पूरा संसार ही आपका ऋणी है। आनंद और परम आनंद की दात्री भी आप हैं। हे मातेश्वरी! मुझ पर ऐसी कृपा करें कि मैं अनुपम और अलौकिक छंदों की रचना करुं। जो भी व्यक्ति आपके तट पर निवास करता है, सच में ही वह स्वर्ग की सैर करता है तथा ऐसा व्यक्ति किसी से वैर-भाव मोल नहीं लेता। मेरा भोला मन-मोर, मीन-कच्छप बन कर आपके पावन जल में निवास करना चाहता है। हे मुनि-सुता! आप पावन और धन्य हैं, इस संसार में आपके समान कोई अन्य नहीं। हे माता! इस घोर कलि काल में ओछे मनुष्यों ने लज्जा उतार फेंकी है, इसलिए मैं आपकी शरण में हूँ और आपके नाम का ही जाप करता हूँ।

जगजननी! आप भगवान विष्णु के श्री चरणों से प्रगट हुई हैं और भगवान शंकर के माथे की शोभा बढ़ा रही हैं। हे माता! हम सबका आपसे जनम-जनम का नाता है। आप धरती-पाताल और आकाश में, तीन धाराओं में विभक्त होकर इनका कल्याण कर रही हैं। हमें अपने मन-भावों को व्यक्त करना नही आता है, आप पुण्यों की राशि हो और नित्य ही जग के पापों को धोने में संलग्न हो। हे मोक्षदायिनी! आपका निर्मल जल तीनों तापों का हरण कर लेता है। आपके जल की निर्मलता की कोई माप नही है। आपके जल की तरंगें, सुंदर भँवर, सबके परितापों का अंत करने वाले हैं। आप जलचर-थलचर-कीट-पतंगों के मध्य किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं करती। मोह रुपी महिषासुर का वध करने हेतु आप कालिका रुप हैं। हे माँ! हमें निर्मल बुद्‌धि प्रदान करें।

जगदीश्वरी! आपके दर्शन मात्र से सकल तापों का विनाश हो जाता है। आपका जल धर्मद्रव है, इसकी उत्पत्ति श्री विष्णु के पद के जल से हुई है। इस पावन जल को महादेव ने अपने शीश पर धारण किया है, इसकी महिमा अपार है, ये जीवित प्राणियों का भी तारण हार है और मृत्युपरांत भी भवसागर से पार लगा देता है। यदि कोई सौ योजन दूर से यानी चार सौ कोस, यानी बारह सौ किलोमीटर दूर से भी गंगा मैय्या-गंगा मैय्या कह कर आपका नाम लेता है तो एक व्यक्ति भी नरकगामी नहीं होता। आप भरपूर दया करने वाली हैं। जो नर सैकड़ों योजन दूर से गंगा जी का नाम लेता है, वह श्री विष्णु के लोक को जाता है और जीवन भर उसके अधूरे कार्य

पूर्णता को प्राप्त होते हैं। जिसने जीवन में यदि एक बार भी श्री गंगा जी के नाम का उच्चारण किया है, वह पाप रहित हो जाता है। उसकी झोली खुशियों से भर जाती है। चित्तवृत्ति संयत हो जाती है। प्राणों की अंतिम बेला के समय जो मन ही मन में स्मरण करता है उसकी तत्क्षण मुक्ति हो जाती है। हे गंगा जी! आपके स्मरण मात्र से सभी पाप दूर हो जाते हैं। आपके नाम का कीर्तन करने से अतिपातक भी नष्ट हो जाते हैं। आप भरपूर शांति प्रदान करने वाली हैं। मन में दृढ़ता रखने और विश्वास करने पर ही सकल कार्य सिद्ध होते हैं। माँ गंगा! आप भवसागर से पार करने वाली हैं। आपका जल विमल और बुद्धि प्रदान करने वाला है। माँ! आपके नाम भी अनेक हैं, आपके जल की धार अत्यंत शुचि है क्योंकि आपका निकास श्री विष्णु के चरण हैं। जिसने ऐसे अदभुत सरिस जल का पान नहीं किया, उसका जीवन बेकार है। गंगा माँ पुण्यों की आगार हैं।

शंकर की जटाऐं माँ का विहार स्थल हैं। दूर देश में बसने वाले भी अगर गंगा के नाम का स्मरण करें तो उन्हें भी सब प्रकार से सुख सुलभ होंगे और उनके अधरों पर मुस्कान नृत्य करने लगेगी। यदि मृतक की अस्थियाँ भी गंगा में प्रवाहित की जाएँ तो वह मृत व्यक्ति हरिलोक निवास का भागी होगा। गंगाजल के पान से सभी रोग दूर हो जाते हैं। दुखः और शोक भी नष्ट हो जाते हैं। हे निर्वाणी माँ गंगा! आपके समान कोई सरिता नही है। माता ! मुझ दीन पर दया कर सकल संतापों का हरण करें। आपसे विनती है कि इस जग के सारे पाप-मैल धोने की कृपा करें।

पृथ्वी पर जितना भी जल है अथवा नदियाँ हैं वह सभी इन्द्र ने स्थापित की हैं। गंगा माता स्वर्ग से उतर कर आई हैं। गंगा जी सात रुपों में भारत भूमि को पवित्र करती हैः-

1. गंगा, 2. गोदावरी, 3. कावेरी, 4. ताम्रपर्णी, 5. सिंधु, 6. सरयू एवं 7. नर्मदा

पुराणों में माता गंगा के चार रुप कहे गए हैः-

1. सीता, 2. अलकनंदा, 3. चक्षु 4. भद्रा

श्री गंगाजी सर्वत्र सुलभ हैं, पर तीन स्थानों पर दुर्लभ मानी गई हैः-

1. गंगाद्वार, 2. प्रयाग, 3. गंगासागर-संगम

हमारे धर्मशास्त्रों में माताओं की पाँच गिनती बतलाई गई हैः-

1. गर्भकाल में नौ मास पेट में रखने वाली माँ।

2. छः माह बाद अन्न, वस्त्र, औषधि देने वाली धरती माता।

3. गंगामाता, 4. वेदमाता 5. गौमाता

बनवारीलाल सोनी
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बचपन की वो याद

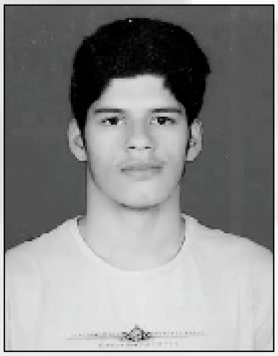

कुनाल के चाचा के लड़के की शादी 18 जनवरी को तय हुई थी। यह शादी कुनाल के लिए बहुप्रतिक्षित थी। उसने पहले से ही इस शादी में जाने की योजना बना रखी थी । यद्‌यपि वह अपने शहर जयपुर से बाहर शादी में जाने के लिए ज्यादा उत्सुक नहीं रहता है। किन्तु यह चाचा जी के लड़के की शादी थी और उसका जाना आवश्यक था। चाचा जी इस शादी के लिए बहुत दिनों से प्रयासरत थे। शादी के लिए कई रिश्ते देखे थे पर बात नहीं बन रही थी। चाचा जी अब अपनी सरकारी सेवा से भी सेवा-निवृत्त हो गए थे। बेटे की शादी के बाद उन्हें अपनी दूसरी बेटी की भी शादी करनी थी। अन्तत: उन्होंने बेटे को ही बहू खोजने की जिम्मेदारी सौंप दी थी। बेटे ने भी उन्हें निराश नहीं किया था और अपने लिए एक प्यारा सा जीवन साथी चुन लिया था। लड़की वाले सजातीय तो न थे किन्तु उनका पैतृक गाँव हमारे गाँव के पास ही था। कुनाल अपनी पत्नी और अपनी बड़ी बहन जो उसी के शहर जयपुर में रहती थी के साथ 17 जनवरी को शाम के समय धवलगिरी अर्पाटमेंट, नोएडा चाचा जी के घर पहुंच गया था। थोड़ी देर में ही न्यूतेर (बारात से एक दिन पूर्व आयोजित किया जाने वाला कार्यक्रम) का कार्यक्रम आरम्भ होने वाला था। कुनाल को जिस बात की आशंका थी, वही हुआ। चाचा जी ने न्योता लिखने की जिम्मेदारी उसे सौंप दी थी। यह कार्य ऐसा होता है, जिसमें व्यक्ति एक ही स्थान पर बंध कर रह जाता है। अपनी मर्जी से न कहीं जा सकता है न आ सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो शादी को "एन्जॉय" नहीं कर पाता है। न्योता लिखने का रजिस्टर और न्योते में आये रूपयों के बैग को न्योता लिखने वाला व्यक्ति इस तरह सम्भाल कर रखता है जैसे सेवा-निवृत्ति पर किसी सरकारी कर्मचारी को ग्रेच्युटी के रूपये मिले हों। न्योते में आये रूपयों में एक रूपये का भी अन्तर आ जाए तो न्योता लिखने वाले की "इन्टीग्रिटी डॉउटफुल" हो जाती है। शादी में उसकी स्थिति कमोबेश ऐसी ही होती है मानो जैसे उसके आगे छप्पन भोग रखे हों और अभी- अभी आई उसकी शुगर रिपोर्ट उसके शुगर का स्तर बहुत ज्यादा बता रही हो। खैर, दी गई जिम्मेदारी को तो निभाना ही था। शादी के शामियाने के एक तरफ बने छोटे टैंट में आते जाते लोगों को न्योता लिखने के बीच - बीच में वह बड़ी हसरत से देख रहा था। खैर आज का दिन तो निकल गया था। रात को उसने पूरा हिसाब करके चाचा जी को सौंप दिया था। कल उसे पूरा विश्वास था कि ये उत्तरदायित्व किसी अन्य को सौंपा जाएगा। दूसरे दिन शादी की रस्में जैसे - जैसे आगे बढ़ रही थी वैसे- वैसे ही कुनाल को न्योते का बैग अपने गले में लटका हुआ नजर आ रहा था। दिल्ली की शादी थी। अधिकांश रिश्तेदार दिल्ली के ही होने के कारण दिन की रस्में निभाकर और खाना खाकर अपने-अपने घरों को चले गए थे। उनका सीधे ही विवाह स्थल पर अपने - अपने साधनों से पहुंचने का कार्यक्रम था। बारात की निकासी के समय चाचा जी ने न्योते का बैग पुन: कुनाल को पकड़ा दिया। इसे तूझे ही संभालना है, यह उनका आग्रह था या आदेश यह कुनाल की समझ में नहीं आया। यद्‌यपि, आज शनिवार था, छुट्‌टी का दिन, सड़कों पर जाम कम था किन्तु नोएडा से दिल्ली बारात स्थल पहुँचने में रात के 9 बज गए थे। बारात के प्रस्थान स्थल पर पहुंचते ही अशोक

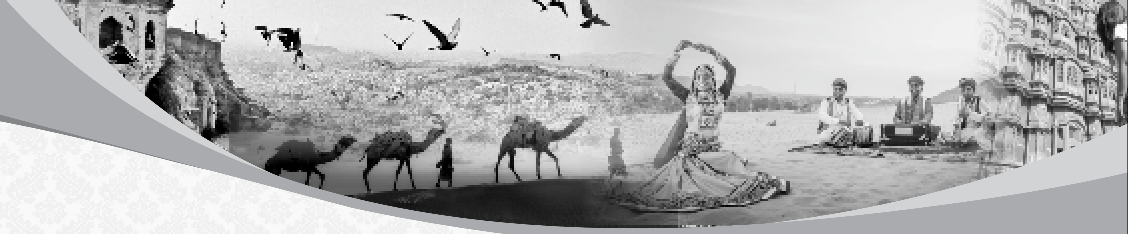

चाचा जी ने आदेश जारी कर दिया, " कुनाल को बारात स्थल पर बैठाओ, लोग न्योता लिखने वाले की राह देख रहे होंगे। सर्दियों के दिन हैं और फिर लोगों को बहुत दूर-दूर भी जाना है"। कुनाल को मन मसोसकर बारात के साथ चलने का मोह छोड़कर सीधे ही बारात स्थल पर पहुंचना पड़ा। वहां उसने एक मेज कुर्सी पर अपना आधिपत्य जमाया और अपना कार्य आरम्भ कर दिया। साथी के रूप में उसके फूफा जी उसके पास आकर बैठ गए थे। न्योता लिखवाने वालों को उसका परिचय फूफा जी ही करवा रहे थे। कुनाल का परिवार उसके बचपन में ही रोजी रोटी की तलाश में जयपुर आकर बस गया था। नाते रिश्तेदारों व ग्रामवासियों में से वह गिने चुने लोगों को ही जानता था। तभी उसके गाँव के आनन्द काका न्योता लिखवाने के लिए आए थे। आज न जाने कितने वर्षों बाद वह काका से मिल रहा था। काका से मिलते ही उसे गाँव में बिताये अपने बचपन के दिन याद आने लगे। आदमी उम्र में चाहे कितना ही बड़ा हो जाए उसके बाल्यकाल की कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जो उसके स्मृतिपटल पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं, जो याद आने पर ऐसा प्रतीत होती हैं, जैसे कल ही यह घटना घटित हुई हो। न्योता लिखते-लिखते पता नहीं कब कुनाल अपने बचपन की एक ऐसी ही घटना को याद करते हुए अपने बचपन के दिनों में चला गया। आनन्द काका उसके बचपन के सखा, उसके हीरो या यों कहें सब कुछ थे। उसका पूरा दिन गाँव के सीढ़ीनुमा खेतों में उनके साथ ही व्यतीत होता था। गाँव के हरे-भरे खेत, पेड़-पौधे, पशु पक्षी कुनाल को बहुत ही आकर्षित करते थे। काका पशु चराने जाते तो कुनाल उनके साथ होता था। काका के आदेश पर वह इधर-उधर गए जानवरों को खदेड़ कर निश्चित स्थान पर ले आता था। काका खेत में हल चलाते तो भी कुनाल साथ होता था। कभी-कभी वे हल की मूठ कुनाल को पकड़ा देते और जब खेत में जोल लगाते तो कुनाल को जोल पर बैठा देते। कुनाल को काका का साथ बहुत भाता था। काका को भी कुनाल से कोई परेशानी नहीं होती थी। ऐसा ही एक दिन था, काका, कुनाल और काका के मित्र रमेश भी उस दिन साथ थे। वे लोग जिस स्थान पर पशु चरा रहे थे उस स्थान पर बांस का एक पेड़ था। काका और उनके मित्र ने एक बांस को पकड़ कर नीचा किया और बारी- बारी से उस पर झूलने लगे। उन्हें ऐसा करते देख कुनाल कब शांत बैठने वाला था वह भी झूला झूलने की जिद करने लगा। आनन्द काका ने उसे उस बांस पर लटका दिया। कुनाल की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह खुशी के मारे चिल्लाने लगा था। किन्तु यह क्या? कुनाल का भार कम होने के कारण बांस धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठने लगा। अब कुनाल की खुशी काफूर हो गई थी। वह भय से रोने लगा। काका भी कुछ समझते तब तक बांस कुनाल को 20-25 फुट उपर ले जा चुका था। काका चिल्लाये-बांस को छोड़ कुनाल छोड़। काका की छोड़-छोड़ की आवाज सुनकर कुनाल ने बांस पर अपनी पकड़ ढीली कर दी। बांस छोड़ते ही कुनाल जमीन पर आ गिरा। कुछ दैव योग से और कुछ काका के प्रयासों से कुनाल को ज्यादा चोट नहीं लगी थी। अचानक फूफा जी की आवाज से कुनाल का ध्यान टूटा और वह वर्तमान में आ गया। शरीर, भरी सर्दी में भी पसीने- पसीने था और होंठों पर थी बचपन की उस याद की मुस्कराहट।

ध्रुव नौटियाल

अतिथि रचनाकार

लेखापरीक्षा वर्गपहेली

1		2		3		4		5
		6				7		
8								
		9		10	11			
	12						13	
14					15	16		17
		18		19				
	20			21				
22			23				24	

बाँये से दाँये- 1. शर्ते, प्रावधान 3. मापदण्ड, पैमाना 6. द्रव 7. पहरेदार, बचाने वाला 8. निपुण, प्रवीण 10. असफल, नाकामयाब 12. घेरा, कक्षा 15. मना करना, अस्वीकार 18. जिद्दी, अड़ियल 20. चित, मानस 21. नभ, व्योम 22. बिना रेशे की जड़ 23. लीन, डूबा हुआ 24. भण्डार, खदान

ऊपर से नीचे- 1. आज्ञा, आदेश अनुसार किसी कार्य को पूरा करना, समापन 2. राय, सलाह 3. गोदाम 4. चुंगी, शुल्क 5. इकट्ठा करना, मिलाना 9. सामान, यात्रियों आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का माध्यम 11. विधि, अधिनियम 13. निष्कर्ष, मूल अंश 14. उद्देश्य, मकसद 16. दरी, फर्श 17. प्रसिद्ध, विख्यात 19. कीमत, मूल्य 20. विषय, शीर्ष

उत्तर इसी अंक में..

किशन लाल मिरोठा
वरि. लेखापरीक्षक

खिड़की

दूर पहाडी में बसा उसका सुन्दर सा बंगला था, बंगला ही उसे वह कहती थी, था तो साधारण सा बना घर। घर के कोने में स्थित खिड़की के किनारे वह अक्सर बैठ जाया करती थी। आते-जाते लोगों को देखा करती। देखा करती थी उनकी अनेक प्रकार की गतिविधियों को। उस दिन वह उदास थी, उसने चार लोगों को एक लाश उठाये देखा था। 'उसे भी एक दिन जाना है'-ऐसा सोचते-सोचते वह अचानक सो गई। सपने में उसने देखा कि भयंकर काले रंग का आदमी उसे झंझोड रहा है-'चलना नही है क्या?' वह अचानक चौंक उठी कि यह किसकी आवाज थी, उठ बैठी। आँखों को मींचते हुए वह बाथरुम की ओर भागी। जीवन के सत्य से वह घबरा गई। उमर भी उसकी हो चली थी। जीवन के साठ वसन्त देख चुकी थी। करने को कुछ था नहीं, बस खिड़की ही एक सहारा थी जिस पर बैठ कर आने-जाने वालों को देखा करती थी। घर का सारा काम समाप्त कर अक्सर बैठ जाया करती थी खिड़की पर। बड़ा सुकून मिलता था उसे खिड़की पर बैठने से। दूर पहाडियों में बच्चे खेलते हुए देखती थी। बच्चों को खेलते-खेलते देखते हुए अचानक वह अतीत में खो गई। मोनू जब सात वर्ष का था, बड़े जतन से पाला था उसे। उसकी इच्छा पूर्ण करने के लिए वह सरपट पहाड़ियों में दौड़ लगाती। कभी सेब तोडकर लाती, कभी लीची से उसका मन बहलाती। बड़ा सुकून मिलता था उसे मोनू की इच्छा पूर्ण करने में। 'दादी, वह ऊपर वाला सेब, तोड़ने भाग जाती थी, जब उसकी उम्र मात्र पचास वर्ष थी। इन दस सालों में उसने बहुत कुछ देख लिया था। उस दिन छाती पीट-पीट कर रोई थी, जब एक पैन्थर उसके मोनू को उठाकर पहाड़ियों में ले गया। बदहवास सी भागती-फिरती रही इधर-उधर, पर मोनू न मिला। पता नहीं कहाँ ले गया था पैन्थर उसे। उसका नामों निशान भी न मिला उसको। अचानक उसकी तन्द्रा भंग हुई। उसने अपने आप को खिड़की पर बैठा पाया। खिड़की पर बैठते-बैठते निहारा करती थी, कब मोनू आए, उसे आवाज दे- 'दादी, वो ऊपर वाला सेब तोडकर ला दो न-बड़ा लाल है।' उसकी हर जिद्द पूरी करने में उसे बड़ा मजा आता था। दादी और मोनू दोनों ही थे, माँ-बाप सड़क दुर्घटना में मारे गए थे। मोनू ही एकमात्र सहारा था उसका। उसको भी पैन्थर उठा ले गया। किसके लिए खाना बनाती और क्यों बनाती? जब मोनू ही नहीं रहा....... । कभी-कभी भूखी ही सो जाया करती थी। उसका कहीं मन नहीं लगता था। खिड़की पर बैठे-बैठे आकाश में उड़ते हुए पक्षियों को निहारी करती थी। दूर उसे भी उड़ जाना है, ऐसा सोचा करती थी। मोनू के जाने के बाद वह बदल गई थी। बदल गई थी उसकी

दिनचर्या भी। नींद भी तो नहीं आती थी। सारी रात जागती रहती, दिन में खिड़की के सहारे अक्सर नींद ले लिया करती थी। कभी-कभी मन में विचार उठता था कि वह इस खिड़की से कूदकर जान दे दे। भला किसके लिए और क्यों जिए ? एक दिन दोपहर की बात है-पहाड़ी के नीचे शोरगुल हो रहा था। वह यह जानने के लिए नीचे उतरी कि क्या बात है, यह शोरगुल क्यों हो रहा है ? एक सत्रह साल का जवान बदहवास सा घूम रहा था। दादी, दादी चिल्ला रहा था। वह आवाज उसके कानों में पड़ी। वह सहसा चौंक गई, यह मोनू की आवाज लगती है। तेज कदमों से चलकर भीड़ के पास गई। सच में मोनू ही खड़ा था। बस फिर क्या था? इस तरीके से मोनू को गले लगाया कि भीड़ की आँखों में भी आँसू आ गए। बस इतना ही पूछ पाई कि इतने वर्षों वह कहाँ रहा? कैसे रहा ?मोनू क्या जवाब देता, उसकी आँखें पथरा गई थी। रोते-रोते उसका बुरा हाल हो गया था। जैसे किसी अन्धे को बटेर मिल गई हो। दादी से अलग नहीं हो पा रहा था। किसी तरह भीड़ ने दोनों को अलग किया। मोनू दादी का हाथ पकड़कर धीर-धीरे पहाड़ी की तरफ जा रहा था। अचानक दादी के सीने में दर्द उठा और वह अपने आप को संभाल भी नही पाई। चार-पाँच लोग दादी को उठाकर जैसे-तैसे घर लाए। दादी अचेत थी। उसको होश नहीं आ रहा था। वह एक बार खिड़की के पास जाना चाहती थी। होश आते ही वह खिड़की की तरफ गई। पहाड़ी से उसने एक बार पेड पौधों को निहारा। निहारते-निहारते कब वह लुढ़क गई, पता ही नही चला। खिड़का के दरवाजे खुले थे, पक्षी उसमें आ रहे थे। दादी की आँखें खिड़की की तरफ लगी थी और वह सदा के लिए खिड़की पर ही सो गई.........

रामानन्द शर्मा
(से.नि.) वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रचनाकारों से अनुरोध

विभाग से संबंधित एवं अन्य विषयों पर प्रकाशन सामग्री एवं प्रतिक्रियाएँ राजभाषा अनुभाग में व्यक्तिशः, डाक द्वारा अथवा ई-मेल पते singhv.raj.sca@nic.in पर प्रेषित की जा सकती हैं। रचनाएँ हस्तलिखित/यूनीकोड में टंकित एवं छाया चित्र स्केन कर हार्ड/सॉफ्ट प्रति में मौलिकता एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ प्रेषित की जानी अपेक्षित हैं।

परिवर्तन

आज शहर में यह क्या मनाया जा रहा है। इधर से कई लोग हरे नारियल के खोलों में हरे पौधे लिये जा रहे हैं। सड़क के किनारे बैठे मूर्तिकार (मिट्टी के पात्र बेचने वाले) ने अपने नौजवान बेटे से पूछा। पापा आज विश्व पर्यावरण दिवस है; इस अवसर पर पौधे बांटे जा रहे हैं। प्लास्टिक के गमलों एवं पॉलिथिन की थैलियों में पौधे नहीं बांट कर हरे नारियल के खोलों में पौधे वितरण किए जा रहे है। नौजवान पुत्र ने अपने पिता से कहा।

बेटा, इस प्लास्टिक ने पहले हमारे अलाव ठण्डे कर दिये और फिर यह पर्यावरण का शत्रु बन बैठा। अपने गमले व मटके आदि कम बिकने लग गए; क्या करें बुजुर्ग पिता ने निराशा भरे स्वर में कहा। पापा कल से अपने भी यहाँ नारियल के हरे खाली खोलों में पौधे उगा कर बेचना शुरू कर देते हैं। हमें भी कुछ परिवर्तन करते रहना चाहिए। बेटे ने कहा।

बुजुर्ग पिता ने हामी भर ली। तब ही वहाँ पर एक कार आकर रूकी। कार में से एक महिला उतरी एवं उसने पक्षियों को जल पिलाने हेतु कुछ मिट्टी के पात्र खरीदे। वह बोली ये मिट्टी के पात्र कुछ भारी लगते हैं, आप प्लास्टिक के पात्र भी रखा करें। मैडम इन मिट्टी क पात्रों में जल ठण्ड़ा रहता है और ये ईको फ्रैंडली है। विक्रेता ने उत्तर दिया। ओह, आई सी ! कहते हुई महिला ने कार स्टार्ट कर ली।

शक

आज उसको टयूशन से घर लौटने में काफी देर हो गई थी। गगन में अंधकार छा गया था। वह डरती-डरती अधोपार (अंडरपास) के निकट आई। शाम के बाद अंडरपास में से निकलना बहुत परेशानी भरा था। वह अन्य महिला राहगीर की प्रतीक्षा करने लगी। घर पर उसकी माँ उसका इंतजार कर रही होगी। वह यह सब सोच ही रही थी कि उसका सैलफोन बजा। माँ मैं अंडरपास के पास आ गई हूँ। उसी समय वहाँ पर दो छात्र आ गए। यार अंडरपास में तो आज भी अंधेरा है; कहते हुए एक छात्र ने मोबाइल निकालकर उसकी टॉर्च चालू कर ली।

उन लोगों ने उस पर नजर डाली और वे आगे बढ़ गए। वह भी हिम्मत करके उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। लड़कों ने पीछे मुड़ कर भी नही देखा। अंडरपास पार हो गया था। उसका शक झूठा सिद्ध हो गया। माँ मैं आ रही हूँ; कहते हुए उसने अपना सैलफोन चालू कर लिया।

देव शर्मा

(से.नि.) सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

छःमाही में राजभाषा हिन्दी में किये गये कार्य का प्रगति प्रतिवेदन

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत विनिर्दिष्ट कार्यालय आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएँ और निविदा प्रारूप द्विभाषी (अंग्रेजी और हिन्दी) में जारी किए जायेंगे । छःमाही के दौरान कुल 233 कार्यालय आदेश जारी किए गए ।

राजभाषा विभाग (राजभाषा नियम 5 के अन्तर्गत) के अनुसार हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों 14,552 में से 6,571 पत्रों का जवाब हिन्दी में दिया गया । शेष पत्रों का जवाब दिया जाना अपेक्षित नही था ।

छःमाही के दौरान अंग्रेजी में कुल 2,096 पत्र प्राप्त हुए जिसमें से 929 पत्रों के जवाब हिन्दी में दिए गए ।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 100% एवं 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों से 65% पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा छःमाही में कुल 28,884 पत्र भेजे गए । जिनमें से हिन्दी में 27,958 पत्र एवं अंग्रेजी में 926 पत्र प्रेषित किए गए ।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा फाइलों में 'क' क्षेत्र में 75%,'ख' क्षेत्र में 50% एवं 'ग' क्षेत्र में 30% टिप्पण हिन्दी में लिखे जाने अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा छःमाही में कुल4,895 टिप्पण लिखे गए जिनमें से हिन्दी में लिखे गए टिप्पणों की संख्या 4,566 है जो कि निर्धारित लक्ष्य से अधिक है। छःमाही के दौरान कार्यालय द्वारा 459 निरीक्षण प्रतिवेदन हिन्दी में जारी किए गए । हिन्दी में भेजे गए निरीक्षण प्रतिवेदनों की प्रतिशतता 100% रही ।

कार्यालय में यूनिकोड-इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड प्रशिक्षण व्यवस्था की स्थापना की गई व छःमाही के दौरान कुल 27 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। छःमाही में 02 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल 45 कार्मिकों द्वारा भाग लिया गया । कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 02 तिमाही बैठकों का आयोजन कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में किया गया एवं सभी सदस्य शाखाधिकारियों ने उक्त बैठकों में भाग लिया ।

राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार 02 तिमाही हिन्दी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया जिनके विषय निम्नानुसार थे ।

प्रथम तिमाही संगोष्ठी के विषय- 1. सोशल मीडिया में बढ़ता हिंदी का प्रयोग

द्वितीय तिमाही संगोष्ठी के विषय- 1. लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी रूपान्तरण एवं राजभाषा का स्वरूप

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अन्तर्गत कार्यालय की वेबसाइट पूर्ण रूप से द्विभाषी एवं अद्यतित है।

दिनांक 02 सितम्बर, 2019 से 16 सितम्बर, 2019 तक कार्यालय में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह में लेखापरीक्षा व सामयिक विषयों पर एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सोत्साह से भाग लिया एवं प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को तत्समय पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची-

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	गौरव कुमार प्रजापत, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	विजय कुमार अग्रवाल, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	भगवान दास, आशुलिपिक ग्रेड-I
2	हिन्दी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता	शिवपाली खण्डेलवाल, लेखापरीक्षक	विक्रम भारती, एम.टी.एस.	रवि शंकर विजय, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
3	हिन्दी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता	रजनीश शर्मा, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	शिवपाली खण्डेलवाल, लेखापरीक्षक	ऋचा शर्मा, लेखाकार
4	हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता	शालिनी अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	ज्योति सैनी, एम.टी.एस.	दिलीप शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार
5	हिन्दी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता	सन्तोष कुमार बूला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	अमित सिंघल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	ज्योति सैनी, एम.टी.एस.
6	हिन्दी स्व-रचित काव्यपाठ प्रतियोगिता	शालिनी अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	रवि शंकर विजय, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	हनुमान गुप्ता, सहायक लेखाधिकारी

छःमाही में अन्य कल्याणकारी गतिविधियाँ

कार्यालय में 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महालेखाकार महोदय द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

माह जुलाई 2019 में कार्यालय के कल्याण प्रकोष्ठ द्वारा चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया जिनमें चिकित्सकों द्वारा कार्मिकों की विभिन्न जांचे की गई ।

28 नवम्बर 2019 को कार्यालय में आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया व कार्मिकों को आपदा प्रबन्धन से संबंधित विभिन्न प्रशिक्षण दिए गये। दिनांक 20.08.2019 को सद्भावना दिवस मनाया गया व सभी कार्मिकों द्वारा प्रतिज्ञा ली गई। दिनांक 02.10.2019 को स्वच्छता अभियान के तहत सम्पूर्ण कार्यालय में साफ-सफाई की गई।

दिनांक 11.09.2019 को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें जयपुर के प्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया। कार्यालय में दिनांक 28.10.2019 से 03.11.2019 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया तथा सभी कार्मिकों द्वारा शपथ ली गई।

श्री कमलेश कुमार रावत

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों के अभिमत

देश के विभिन्न कार्योलयों से पिछले अंक पर प्रतिक्रिया स्वरुप हमें सुधी पाठकों के जो अभिमत प्राप्त हुए, उनमें से कुछ पत्रों के अंश साभार प्रकाशित कर रहे हैं।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशाली तथा रोचक है। श्रीमति मीना कँवर की "छोटू उस्ताद", श्री देव शर्मा की "लालिमा" कहानी सराहनीय है। सपना गर्ग की अंश एवं श्री रामानन्द शर्मा की "कभी मत सोचना" कविताएँ अति सराहनीय है। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी (प्रशासन), महालेखाकार कार्यालय (लेखा एवं हकदारी), आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद

पत्रिका प्रेषण के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं। पत्रिका की साज सज्जा भी अत्यन्त सराहनीय है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। उत्कृष्ट साज-सज्जा एवं सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

हिन्दी अधिकारी, कार्यालयमहालेखाकार (ले. एवं हक.) ओड़िशा, भुवनेश्वर

पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति सुन्दर है। पत्रिका का मुद्रण तथा संपादन अत्यन्त सराहनीय है। प्रत्येक रचनाओं में से कुछ रोचक जानकारी, ज्ञानवर्धक विषय, मन को छूने वाले भाव एवं सीख मिलती है। इस हेतु पत्रिका में समाहित सभी स्तरीय रचनाओं के लिए रचनाकारों को विशेष बधाई एवं सम्पादक को विशेष शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक) गुजरात, राजकोट

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सुपाठ्य, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संचालन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा अर्चना' के उज्जवल भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, आर्थिक एवं सेवा मंत्रालय, ए.जी.सी.आर. आई.पी.एस्टेट, नई दिल्ली

इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएं प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री अनिल गुप्ता का आलेख "वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट", सुश्री सोनाली का आलेख "सोशल मीडियाः एक जटिल दुनिया", श्री विक्रम भारती की कविता "धैर्य की परीक्षा", तथा श्री कैलाश आडवानी की कविता "आओ चलें सत्य की ओर" बहुत प्रशंसनीय है । पत्रिका के सफल संचालन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याणअधिकारी/राजभाषा, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक), राजस्थान, जयपुर

सदैव की भाँति पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय है। छाया चित्रों का संकलन उत्तम है। राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु कार्यालयों द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्व होता है तथा इससे कार्यालयों में होने वाली घटनाओं तथा कार्यक्रमों से अवगत कराने में सुगमता होती है। इस सम्बन्ध में पत्रिका सार्थक सिद्ध होती है। पत्रिका के सम्मानित संपादक मंडल के सदस्यों व सभी रचनाकारों के अथक परिश्रम को हमारी ओर से हार्दिक धन्यवाद।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका ''लेखापरीक्षा अर्चना'' के उज्जवल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

हिन्दी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं पर सुश्री सोनाली की रचना,"सोशल

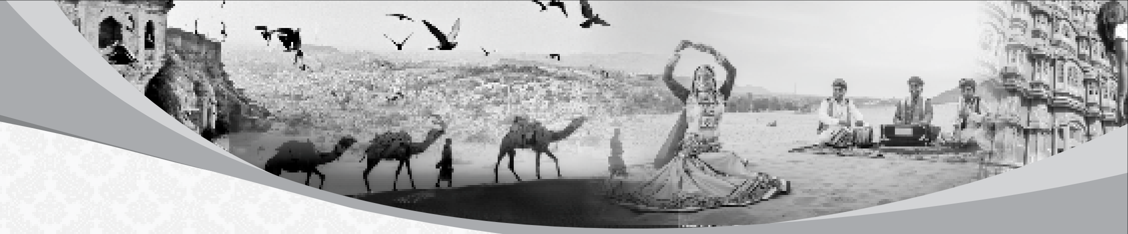

मीडिया",श्री बनवारी लाल सोनी की रचना,"प्राचीन रामायण", श्रीमती मीना कंवर, "छोटू उस्ताद", श्री पंकज ढाका का यात्रा वृतान्त, "धरती पर स्वर्ग-फूलों की घाटी" काफी दिलचस्प है। श्रीमती शिवपाली खण्डेलवाल का आलेख, "गर्भस्थ की देखभाल" काफी ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी, महा निदेशक, लेखापरीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

पत्रिका में समाविष्ठ सभी लेख, कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री मनोहर लाल मीणा की रचना "लेखापरीक्षा के दौरान ध्यान रखने योग्य महत्तवपूर्ण बिन्दु",श्री अनिल गुप्ता का आलेख "वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट", श्री पदम चन्द गाँधी की रचना "साहस जीवन की शक्ति", तथा श्रीमति मीना कँवर की रचना "छोटू उस्ताद", आदि उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुन्दरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। रचनाएं "व्यंग्य कविता", "साहस जीवन की शक्ति", "प्राचीन रामायण" एवं "सन्त साहित्य का हिन्दी में योगदान" विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल बधाई के पात्र है।

लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, चण्डीगढ़

लेखापरीक्षा वर्गपहेली हल

[1]नि	य	[2]म		[3]मा	न	[4]क		[5]सं
ष्पा		[6]त	र	ल		[7]र	क्ष	क
[8]द	क्ष			खा				ल
न		[9]प		[10]ना	[11]का	म		न
	[12]प	रि	धि		नू		[13]सा	
[14]ल		व			[15]न	[16]का	र	[17]ना
क्ष्य		[18]ह	ठी	[19]ला		ली		म
	[20]म	न		[21]ग	ग	न		ची
[22]कं	द		[23]र	त			[24]खा	न

लेखापरीक्षा शब्दावली

Ab initio	आरम्भ करना	Adjourn	स्थगित करना
Capital expenditure	पूंजीगत व्यय	Censure Motion	निन्दा प्रस्ताव
De Facto	वस्तुतः, वास्तविक	De Jure	विधिवतः
Ex-gratia	अनुग्रहपूर्वक	Ex-officio	पदेन
Forfeiture	जब्ती	Framework	रूपरेखा
Ibid	वहीं	Inter alia	अन्य बातों के साथ साथ
Joint annuity	संयुक्त वार्षिकी	Modes operandi	कार्य प्रणाली
Mutatis Mutandis	यथोचित परिवर्तनों सहित	Note Bene (N.B.)	ध्यान देवें
Per Capita	प्रति व्यक्ति	Sine die	अनिश्चित काल के लिए
Suo Moto	स्वतः, प्रेरणा	Quasi-permanent	स्थायीवत्
Reciprocal	पारस्परिक	Redressal	निवारण
Whistleblower	अग्रचेतक	Versus	बनाम

- टिप्पणियां हिन्दी में लिखिए।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

आज है 15 अगस्त

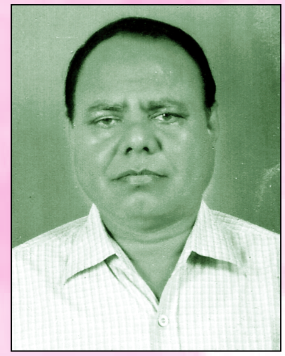

आज है 15 अगस्त।
फिरंगियों को किया हमने पस्त।।
आजाद हुआ देश, रहो मस्त।।।

प्रथम आक्रमणकारी आया था सिकन्दर।
पोरस में युद्ध की ताकत थी अन्दर।।
विदेशी सेना को किया ध्वस्त, आज है 15 अगस्त।।।

कासिम, गजनवी, गौरी ने किया आक्रमण।
सोने की चिड़िया को लूटकर किया भ्रमण।।
भारतियों ने किया उनको पस्त, आज है 15 अगस्त।।।

सेल्युकस ने मौर्य के आगे घुटने टेके।
लिखा है इतिहास सारी दुनिया देखे।।
भारत के आगे दुनिया नतमस्तक, आज है 15 अगस्त।।।

लक्ष्मीबाई, झलकारी को करते हम नमन।
फिरंगी सेना का किया उन्होनें-दमन।।
दुर्गा बनकर युद्ध किया मस्त, आज है 15 अगस्त।।।

हैदर अली, टीपू सुल्तान की तलवार।
विदेशियों को हराया बार-बार।।
ईस्ट इण्डिया कंपनी को किया ध्वस्त, आज है 15 अगस्त।।।

लाल, बाल, पाल, भगतसिंह, राजगुरु लाये क्रान्ति।
डर गये फिरंगी, चाहने लगे शान्ति।।
असेंबली को बम से किया त्रस्त, आज है 15 अगस्त।।।

महात्मा गाँधी का सामान्य कद काठी।
तन पर लंगोटी हाथ में थी लाठी।।
अहिंसात्मक, असहयोग आन्दोलन चलाया मस्त, आज है 15 अगस्त।।।

आतंकवाद, अलगाव का कश्मीर में था भंवर-जाल।
धारा 370, 35ए का कर दिया गया इंतकाल।।
केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया मस्त, आज है 15 अगस्त।।।

आतंकवादियों ने पुलवामा में मारे कई जवान।
भारतीयों ने मुकाबला किया सीना तान।।
बालाकोट में हमला कर अड्डों को किया नष्ट, आज है 15 अगस्त।।।

एक नागरिक, एक झण्डा, एक विधान, एक देश हमारा।
यही है अखन्ड भारत, सारी दुनिया को प्यारा।।
विदेशी माल, विदेशी ताकतों को करेंगे हम धवस्त, आज है 15 अगस्त।।।

मदन लाल कोली
(से.नि.) लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय में आयोजित कवि सम्मेलन का लुफ्त उठाते कार्यालयकर्मी

कार्यालय में स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत सफाई करते हुए अधिकारीगण एवं अन्य कार्यालयकर्मी

पंजीयन संख्या: RAJHIN/2014/58890

मुद्रक : अशोका ऑफसेट मो.: 9982292263